

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली



भारत में मुसलमानों की विशेषता

“मेरे सीमित अध्ययन में इस मिल्लत (कौम) का जीवन तथा उसके लम्बे सफर तथा अनुभव की रोशनी में यह बिल्कुल अजोखा उदाहरण है कि हम एक ऐसे देश में रहते हैं जहां हम एक बड़ा अल्पसंख्यक वर्ग हैं। यह वर्ग इतना बड़ा है कि यदि वह अपनी योग्यताओं का प्रमाण दे, बहु संख्यकों से अधिक मेहनत से काम करे तथा अपनी क्षमता व उपयोगिता तथा सच्चाई व ईमानदारी का प्रदर्शन करे तो वह शीर्ष सत्ता तक भी पहुंच सकती है। और यदि यह नहीं तो कम से कम देश की दिशा बदल सकती है और सत्ता को अपनी क्षमता व उपयोगिता को लोहा मनवाने पर मजबूर कर सकती है।”

हज़रत मौलाना रैय्यद अब्दुल हसन अली हसनी नववी (रह)



MAY - JUN 19



मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

आखिरत बेहुत रीन और बाकी सहनी पाली है

‘इन्हे मसउद रजि० सहबी से रिवायत है कि नबी करीम स०अ० ने फ़रमाया कि दऊद अलैहिस्सलाम ने (एक बार) अर्ज़ किया कि या अल्लाह! उस शख्स का क्या सिला है जो तेरी रजाजोई के लिए मैय्यत के साथ उसकी कब्र तक जाए? इरशाद हुआ; उसका सिला यह है कि खुद उसके जनाजे के साथ मेरे फ़रिश्ते जाएंगे और उसकी रुह भी नेक रुहों के साथ रहा करेगी।’

अल्लाह अल्लाह! बन्दा—ए—मोमिन ज़मीन के नज़दीक कैसा मुअज्ज़ज़ व मुकर्म होता है, उसका ज़िक्र ऊपर की हदीस में आ चुका है कि हर क़त्त ज़मीन उसे अपने आगोश—ए—राहत में लेने के लिए बेक़रार रहता है और वह आसमान के नज़दीक कितना मुहतरम होता है, इसका बयान पहले किसी हदीस में हो चुका है और अब बयान इसका हो रहा है कि फ़रिश्ते जो खुद एक मुकर्ब तरीन मख्लूक हैं, उनके यहां बन्दा—ए—मोमिन का यह ऐज़ाज़ और क्या मर्तबा होता है? फ़रिश्ते उसकी मैय्यत के जुलू में, उसके ऐज़ाज़ व इकराम में बतौर खदम व हश्म के चलेंगे और उसके हक़ में दुआएं करते रहेंगे। कौन मुसलमान ऐसा होगा जो अपने इस ऐज़ाज़ के मुशाहिदे के बाद खुद अपने ऊपर रशक न करेगा और अपने को मुबारकबाद न देगा कि मैं किस जुल्मत कर्दे और किस जेलखाने से छूट कर ऐसे राहतकर्दे और ऐसे इज़्जत कर्दे में आ गया।

कब्र यानि बरज़ख की नेमतें

‘सईद बिन अलमसैब रजि० से रिवायत है कि हजरत आयशा रजि० ने कहा; या रसूलुल्लाह! आप स०अ० ने जब से मुनकर व नकीर की आवाज़ और कब्र के दहाने का मुझसे ज़िक्र फ़रमाया, कोई चीज़ मुझको तसल्ली में नाफ़ेअ नहीं होती है। आप स०अ० ने फ़रमाया: ऐ आयशा! मुनकर व नकीर की आवाज़ें मोमिनों के कानों में ऐसी होंगी जैसे सुरमा आंख में (लज़्जत बरखा होता है) और कब्र का फिशार मोमिन के हक़ में ऐसा राहत बरखा होगा कि जैसे कोई बेटा मादरे मुशफ़िका से दर्दे सर की शिकायत करे और वह उसके सर को नर्म नर्म दबाए।’

सुन लिया आपने! मुनकर व नकीर की वह चीख और डांट जो बड़े मज़बूत दिलवालों को हिलाकर रख दे और सबको हिला दे, वह मोमिनों के हक़ में ऐसी राहतबरखा व लज़्जतबरखा होगी जैसे कोई आंख में सुरमा लगाकर ठण्डक हासिल करता है और कब्र का वह फिशार जो दुश्मनाने खुदा के हक़ में यूं होगा कि जैसे अण्डे पर कोई भारी पत्थर गिरागर उसको चकनाचूर कर दे, वह मोमिन के हक़ में ऐसा होगा जैसे कोई शफ़ीक मां अपने प्यारे बेटे सर प्यार व मुहब्बत से दबाती रहे। क्या खुदा न ख्वास्ता आपको इस बयान में किसी मुबालगे, किसी तसन्ने व तकल्लुफ़, किसी शायरी का एहतिमाल है? जिस आलमे कब्र को आप इस दर्जे मुहीत व दहशतनाक समझते थे और जिस आलमे बरज़ख के नाम से पहले आपके रोंगटे खड़े होते थे उसका उस दर्जा तशफ़फ़ी बरखा हाल आपने सादिक व मसदूक रसूले मक़बूल स०अ० की ज़बान से सुन लिया या नहीं, अब भी वह कोई चीज़ वहशत व दहशत की किसी दर्जे में किसी मोमिन के लिए बाक़ी रह गयी? या उल्टा वह मकाने राहत व सामाने मसरत व सामाने ऐश हर ईमान वाले के हक़ में बन गयी।

‘हजतर अबू सईद खुदरी सहबी रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स०अ० ने फ़रमाया कि जब बन्दा—ए—मोमिन को दफ़न किया जाता है तो कब्र उससे कहती है कि खूब आए तुम, बहुत खूब आए तुम, तुम तो मुझे महबूब तर ही थे जो मेरी सतह पर चलते थे, तो आज मैं तेरी कार परदाज बना दी गई हूं और तुम मेरे पास आए हो तो देखना अपने साथ मेरा मामला। फिर हृदे नज़र तक कब्र उस बन्दे पर फ़राख हो जाती है और उसका दरवाजा बेहिश्त की तरफ़ का खोल दिया जाता है और रसूलुल्लाह स०अ० ने यह भी फ़रमाया कि कब्र या तो एक बाग हो जाती है, बेहिश्त के बागों में से, या खन्दक हो जाती है, दोज़ख की खन्दकों में से।’

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक: ७-६

मई - जून २०१९ ₹५०

वर्ष: ११



संरक्षक

हजरत मौलाना
सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)



सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी



सम्पादकीय मण्डल

मुफ्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नारवुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी



सह सम्पादक

मो० नफीस रखँ नदवी



अनुवादक

मोहम्मद
सैफ़

मुद्रक

मो० हसन
नदवी

इस अंक में:

बरकत वाले दिन.....	२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी इबादतों का लाज़िम एवं मुतअद्दी पहलू.....	३
हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी इहो कुरआन का स्थान तथा उसका संदेश.....	६
हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी आइना—ए—नववी.....	१०
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी (इहो) दीन के किले की दीवारें मज़बूत करो.....	१२
मौलाना खालिद लिद्दीकी नदवी ग़ाज़ीपुरी ज़कात की अहमियत व फ़ज़ीलत.....	१४
मुफ्ती मुहम्मद सलमान साहब एतिकाफ की अहमियत व फ़ज़ीलत.....	१६
मुफ्ती अब्दुर्रहीम क़ासमी रोज़े के जिस्मानी व रूहानी फ़ायदे.....	१८
हकीम क़ाज़ी खालिद, (एम. ए.) रोज़े की कुछ अनिवार्यताएं एवं मसले – सहरी व नियत...२२	
बीफ़ एक्सपोर्ट में भारत दुनिया का नम्बर वन देश बना....२७	
इस्लाम का उदय एवं इसके मूलभूत कारण.....२८	
मुहम्मद नफीस खाँ नदवी	

E-Mail: markazulimam@gmail.com

प्रकाशन

www.abulhasanalalinadwi.org

मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, य०पी०.२२९००१

प्रति अंक
10रु

मो० हसन नदवी ने इस० ऐस० आफ़सेट प्रिंटर्स, मस्जिद के पीछे, फ़ाटक अब्दुल्लाह खाँ, सज्जी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से
छपाकर आफ़िस अरफ़ात किरण, मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक
100रु०

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

बरेखला लालौ दिन

• विलाल अद्वल हयि हसनी नदवी

कथामत की अलामत यह भी है कि ज़माना समेट दिया जाएगा। साल एक महीना और महीना एक हफ्ता मालूम होगा। ज़माने की बर्क रफ़तारी उसकी ग़म्माज़ है। किस तरह साल व महीने गुज़र रहे हैं, इसको हर शख्स महसूस कर रहा है। रमज़ान का यह मुबारक महीना जिसका लम्हा—लम्हा ख़ैर व बरकत है किस तरह तेज़ी के साथ गुज़र रहा है, लगता है कि सोचने की भी मोहलत नहीं। ज़रा सी ग़फ़लत कितनी बड़ी महरूमी की वजह बन सकती है, पलक झपकी और ईद का चांद सामने।

ज़रूरत तो इसकी भी थी कि रमज़ान से पहले ही पूरा निज़ाम बना लिया जाता और एक—एक लम्हे की क़द्र होती। दुनिया के कामों को पहले ही से ठिकाने लगा दिया जाता, मगर अब जो वक़्त भी रह गया है, उसको ग़नीमत समझा जाए और भरपाई की कोशिश की जाए। जो लोग पहले से तैयारी कर लेते हैं और दिल की ज़मीन को रहमते इलाही के क़ाबिल बना लेते हैं उन पर पहले दिन और पहले लम्हे से रहमतों की बारिश होती है। वह मिनटों और सेकेन्डों का हिसाब करते हैं। एक लम्हा भी ग़फ़लत में न गुज़रने पाए यह ख़ास कमाई का ज़माना है। वह बोलते हैं तो तौलते हैं, कोई बात नामुनासिब ज़बान से न निकल जाए। ग़ीबत, चुग़ली, बुरी बात कहना, अश्लीलता का तो सवाल ही नहीं, बेकार की बातों से भी बचते हैं। वह अपने अमल का हिसाब लेते रहते हैं, बल्कि बेहतर से बेहतर की तरफ़ उनका सफ़र जारी रहता है।

जो पहले से फ़िक्र नहीं करते वह अक्सर पूरा महीना ग़फ़लत में गुज़ार देते हैं। रोज़ा काटने के ज़रिये तलाश करते रहते हैं। यह मुबारक महीना उनको बोझ महसूस होता है और बहुत से क़िस्मत के महरूम वह भी होते हैं जिनके रमज़ान और गैर रमज़ान में कोई फ़र्क ही नहीं होता। नाम मुसलमान का लेकिन काम गैरों के।

अल्लाह तआला ने यह महीना उम्मत की फ़लाह व बहबूद के लिए रखा है। इसके ज़रिए से सालभर का कोटा हासिल होता है। यह एक महीने की मेहनत साल भर काम आती है। हज़रत मुज़दिद अल्फ़े सानी इमाम सरहिन्द ने लिखा है कि जिसका रमज़ान अच्छा गुज़र गया उसका पूरा साल अच्छा गुज़रता है।

यह महीना ज़िक्र व तिलावत का है। दुआ व मुनाजात का है। गमगुसारी का है व हमदर्दी का है। इसको हडीस में “शहरुल मुआसात” कहा गया है। इस महीने में अल्लाह ने रोज़े इसलिए फ़र्ज़ किए ताकि मिज़ाज में तक़वा पैदा हो और आदमी एहतियात की ज़िन्दगी गुज़ारने का आदी बने। जो अल्लाह के लिए जाएज़ व हलाल चीज़ें छोड़ रहा हो वह हराम, शुष्के वाली चीज़ों को कैसे अखित्यार कर सकता है। रोज़ों से अपने मन पर कंट्रोल करने और उसको काबू में रखने की मशक होती है और यह मशक उसकी ज़िन्दगी में ढाल की तरह साबित होती है। वह इसके ज़रिए से अपनेआप को शैतानी हमलों और नफ़सानी चालों से महफूज़ रखता है।

जितने भी दिन इस मुबारक महीने के बाकी हैं, उनको बेहतर से बेहतर गुज़ारने की कोशिश की जाए ताकि यह महीना हमसे राज़ी होकर जाए और हम इस बद्दुआ के मुस्तहिक न हो जाएं जो आप (स0अ0) ने उस शख्स को दी है जिससे यह महीना नाराज़ होकर जाता है।

ઇબાદતો કા લાજીમ એવ મુતઅદ્દી પહ્લૂ

હજરત મૌલાના સૈયદ અબુલ હસન અલી હસની નદવી (રહો)

રમજાન મિજાજ બનાને કે લિએ હૈ:

રમજાન મિજાજ બનાને કે લિએ હી હૈ। રમજાન તો નપા તુલા હૈ। કોઈ ઇસમેં બઢોત્તરી નહીં કર સકતા। અગર સારી દુનિયા કે ઇન્સાન યહ ચાહેં કી રમજાન કો રોક લેં તો રોક નહીં સકતો। વહ તો ચાંદ કે નિકલને પર હૈ। રમજાન મેં તો હમારે બહુત સે દોસ્ત બહુત સે સવાબ કે કામોં મેં લગે રહતે હૈનું ઔર ગુનાહોં સે બચ ભી જાતે હૈનું, લેકિન બહુત સે લોગ યહ કરતે હૈનું કી રોજા તો રખતે હૈનું ઔર ખાના-પીના છોડ દેતે હૈનું લેકિન વહ જો કામ રમજાન ઔર ગૈર રમજાન મેં મના હૈ ઉનસે નહીં રૂકતે। જહાં રમજાન રૂખ્સત હુઆ વહાં ઇબાદતોં ભી રૂખ્સત હુર્ઝી। તો રમજાન તકવા પૈદા કરને કે લિએ હૈ। યાનિ મિજાજ બન જાએ ઔર લિહાજ પૈદા હો જાએ તો યહ કુલ કા હી સબક દોબરાયા હૈ।

નમાજ કા લાજિમ ઔદ મુતઅદ્દી પહ્લૂ:

દૂસરી બાત યહ હૈ કી હર ચીજ મેં એક ચીજ લાજિમ (પ્રત્યક્ષ) ઔર એક ચીજ મુતઅદ્દી (અપ્રત્યક્ષ) હોતી હૈ। છાત્ર તો ઇન શબ્દાવલિયોં કો અચ્છી તરહ જાનતે હોંગે। લાજિમ તો યહ હૈ કી ઉસકા અમલ ઉસી તક સીમિત રહ જાએ, ઉસસે બઢા હુઆ ન હો। નમાજ કા લાજિમ યહ હૈ કી નમાજ મેં “માનો કી વહ તુમ્હેં દેખ રહા હૈ” કા મંજર હો। એહસાન કી ખૂબી નમાજ કે અન્દર પૈદા હો જાએ। અગર યહ ખુદા કો ન દેખે તો ખુદા ઉસે દેખ રહા હૈ યહ ખ્યાલ દિલ મેં પૈદા હો જાએ। યહ નમાજ લાજમી હૈ। ઔર એક નમાજ મુતઅદ્દી ભી હૈ ઔર વહ કિસ તરહ, દો તરહ સે નમાજ મુતઅદ્દી હૈ। એક નમાજ પઢને વાલે કે એતબાર સે મુતઅદ્દી ઔર દૂસરે દૂસરે કે લિહાજ સે ભી નમાજ મુતઅદ્દી હૈ। નમાજ પઢને વાલે કે એતબાર સે નમાજ કા કાદિયા યહ હૈ કી નમાજ જબ ખત્મ હો જાતી હૈ તથી મુતઅદ્દી રહતી હૈ ઔર વહ યહ હૈ કી વહ નમાજ નમાજ પઢને વાલે કો ફહશ સે રોકતી હૈ। મુતઅદ્દી નમાજ સે ઇસ બાત કી ઉમ્મીદ હો જાતી હૈ કી વહ નમાજ પઢને

વાલે કો ગુનાહ સે રોકેગી, તો મુતઅદ્દી નમાજ કે લિએ યહ મેયાર તથ કિયા હૈ કી નમાજ હો તો ગુનાહ ન હો ઔર અગર નમાજ પઢને કે બાદ નફ્સ કી તરફી રહી ઔર યહ ગુનાહ કી તરફ ચલ પડ્યા તો યહ નમાજ લાજમી હૈ, મુતઅદ્દી નહીં હૈ। અગર નમાજ પઢને વાલા ગુનાહ સે રૂક ગયા તો યહ નમાજ મુતઅદ્દી હૈ નમાજ પઢને વાલે કે એતબાર સે।

ફિર અગર યહ નમાજ મેં જ્યાદા મુતઅદ્દી કી સિફાત હોં તો યહ ઇસ પર હી ઇન્હિસાર નહીં હૈ કી વહ નમાજ ખુદ ગુનાહ સે રોકતી હૈ બલ્કિ અગર નમાજ સહી હો જાએ તો યહ નમાજ વહાં કે માહૌલ સે ટકરાતી હૈ ઔર વહાં કે માહૌલ ઔર નમાજ કે બીચ જંગ હોતી હૈ। ફિર યહ નમાજ ઇસ્લાહ, તજકીર, મુસાહબા ઔર એહતિસાબ પર આમાદા કરતી હૈ। ઇસલિએ આપ દેખિએ કી હજરત શોએબ (અલૈહિસ્સલામ) ને જબ અપની કૌમ કો દાવત દી તો કૌમ ને હજરત શોએબ (અલૈહિસ્સલામ) કો દેખા કી ઉનમેં ઔર કૌમ મેં ક્યા ફર્ક હૈ। યહ જો હલાલ વ હરામ મેં ઔર ફસાદ ઔર ભલાઈ મેં ઔર ખુદા કી બન્દગી ઔર ગુનાહ પર ઔર મસલા ઔર ગૈર મસલે પર ફર્ક કો માલૂમ કિયા તો ઉનમેં સે બાજ સમજ વાલોં ને સમજ લિયા કી ઇનમેં યહ ચીજ પૈદા કરને વાલી નમાજ હૈ। વહ યહ સમજ ગએ ઔર કહને લગે કી એ શોએબ, ક્યા તુમ્હારી નમાજ ઇસસે રોકતી હૈ? ઔર કુરાન ને ઉનકે ઇસ સવાલ કી કાટ નહીં કી। ઇસસે યહ માલૂમ હુઆ કી નમાજ સે યહ ચીજેં પૈદા હોતી હૈનું। યહ મુતઅદ્દી હોને કા દૂસરા પહલૂ હૈ। પહલા મુતઅદ્દી પહલૂ યહ હૈ કી નમાજ નમાજ પઢને વાલે કો બેહયાઈ સે રોકતી હૈ। ફિર દૂસરા મુતઅદ્દી પહલૂ યહ હૈ કી વહ નમાજ દૂસરોં કો બુરાઈ સે રોકને વાલી બનતી હૈ। વરના હજરત શોએબ (અલૈહિસ્સલામ) કી કૌમ ઉનકો ન પહ્યાનતી। લેકિન યહ પહ્યાન લેના કી ઇસ નમાજ ને હી હજરત શોએબ કો હમસે અલગ કર દિયા હૈ। યહ મુતઅદ્દી પહલૂ હૈ।

ज़कात का लाजिम और मुतअद्दी पहलू:

इसी तरह ज़कात है। ज़कात का एक तो लाज़मी पहलू है कि उससे फ़र्ज़ पूरा होता है और दूसरा मुतअद्दी पहलू यह है कि वह माल की सफाई करती है। लपेज़ ज़कात खुद साफ़ करने को बतलाता है। बाज़ ने कहा है कि ज़कात माल की सफाई करने वाली है। पहले ज़कात ने माल की सफाई की फिर इन्सान की सफाई करती है और फिर पूरे माहौल को ठीक करती है और फिर पूरे इलाके के फ़साद को दूर करती है। आपस की जंग को दूर करती है। नफ़रत और दुश्मनी को दूर करती है। आपस में भाईचारा पैदा करती है। यह जितनी दुनिया में पार्टियां बन रही हैं, वह सब माल की लालच का नतीजा है। और यही दुश्मनी की वजह है। अगर दुनिया के सारे इन्सान माल को सही तरीके से खर्च करें तो यह तमाम ख़तरा और तमाम फ़साद और सारे झगड़े और यह तमाम तबक़ती अनासिर (साम्रयदायिक तत्व) और तमाम कशमकश ख़त्म हो जाए।

हज़ का लाजिम और मुतअद्दी पहलू:

अब आइये हज़ की तरफ़। हज़ लाजिम भी है और हज़ मुतअद्दी भी है। हदीस में आता है कि जिसका हज़ मक़बूल हो गया वह मानो वह अभी पैदा हुआ है। यह तो उसका लाजिम है और हज़ का तादिया और नफ़ा यह है जिसे खुदा फ़रमाता है: "अगर हज़ सही है वह हज़ ज़िन्दगी पर असर डालेगा।"

हज़ का असर सिर्फ़ अतीत से जुड़ा हुआ नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य से भी जुड़ा हुआ है। इस पर भी वह हज़ असर डालेगा और रुहानियत में तरक़ी और हालात में तब्दीली पैदा करेगा और फिर वह हज़ सारे बुरे कामों, मामलों की ख़राबी, बेवफ़ाइयों और बुराइयों को दूर करने वाला होगा। हज़तर मौलाना यूसुफ़ साहब (रह0) के कौल के मुताबिक अगर हज़ हमारा सही होता तो दुनिया के मामले ही कुछ और होते। हज़ के सही होने पर क़ादिया यह था कि पहले हाजियों के क़ाफ़िलों के गुज़रने पर लोग सलाम लाया करते थे और अब मामला बिल्कुल अलग है। आज यह हाल है कि हाजी जिधर से गुज़रता है अल्लाह तआला ही माफ़ फ़रमाए और कोताहियों पर दरगुज़र फ़रमाएं, उनके गुज़रने पर गैर मुस्लिम इस्लाम तो क्या लाते, इस्लाम से ही दूरी अखियार कर लेते हैं। मानो हज़ उनके इस्लाम से दूर

होने का ज़रिया हो रहा है। बन्दरगाह पर जाकर आप देखें, वहां के लोग अच्छे—अच्छे लोगों से भी यह कहते हैं कि हमको अब किसी पर एतबार नहीं रहा, आप भी अपनी तलाशी करवाइये।

रमज़ान का लाजिम और मुतअद्दी पहलू:

इस तरह रमज़ान का भी एक लाजिम और मुतअद्दी पहलू है। रमज़ान का लाजिम यह है कि हदीस में है कि जिस शख्स ने रोज़ा रखा, ईमान और एहतिसाब की शर्त के साथ, उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं और रमज़ान का तादिया यह है कि बाद के महीने और रमज़ान के बाद के वक्त में भी गुनाह से बचना चाहिए। साहबे मामला यानि ख़रीदार हैं या बेचने वाले, हाकिम (शासक) हैं या महकूम (शासित), अमीर हैं या ग़रीब, मुतालिम (छात्र) हैं या मुअलिम (शिक्षक), किसान हैं या व्यापारी, हर हाल में यह बात हो कि आप रोज़ादार की तरह हों। जिस तरह नमाज़ की पहचान माथे पर है उसी तरह माथे पर ऐसा नूर हो कि जिससे मालूम होता हो कि आपका रोज़ा है। आपका लेना—देना और घर के मामलात और बर्ताव भी शहादत दे रहे हैं और रोज़े का असर और रोज़े की हकीकत का कि हमारे रोज़े कुबूल हैं, यह रोज़ों का तादिया है अर्थात् वह पहलू जिससे समाज को लाभ हो।

बहुत से लोग रमज़ान तक का रोज़ा रख लेते हैं यानि रमज़ान तक गुनाहों से बच जाते हैं, फिर रमज़ान का मक़सद ख़त्म कर देते हैं। मानों रमज़ान की एक शख़िस्यत थी, फिर रमज़ान के बाद दूसरी शख़िस्यत आ गयी। यह ऊपर का तबक़ा है। लेकिन यह भी कोई आला नहीं, रमज़ान की नूरानियत और बरकत, रमज़ान तक बाकी रहे यह तो लाज़मी पहलू है लेकिन उसका मुतअद्दी पहलू यह है कि उसका असर पूरे माहौल में पहुंचे और पूरे माहौल में उसकी खुशबू फैले और सबको यह मालूम हो कि उन्होंने रोज़ा रखा था और रोज़ा रखने वाले ऐसे ही होते हैं। हज़रत ख़वाजा निज़ामुद्दीन औलिया (रह0) को उनके पीर ने इजाजत देते हुए जो वसीयत की थी वह यह थी कि हक़ की अदायगी की जाए। इसलिए जब देहली आए तो एक तालिब इल्म (छात्र) की एक किताब का हक़ था। किताब ख़रीद कर और जिल्द बंधवाकर उसे हवाले की। दूसरे कपड़े वाले के कुछ पैसे थे। बहुत दिन हो गए थे उसे भी वह पैसे याद न होंगे और

हज़रत के पास पैसे जमा होने का सवाल ही नहीं था, फिर भी जमा करके ले गए और उसे जाकर दिया। इस पर उस कपड़े वाले ने जो मुसलमान नहीं था जो बात कही, वह सुनहरे शब्दों से लिखने के काबिल है और दिल पर लिख लेने के काबिल है। उसने कहा कि ऐसा मालूम होता है कि तुम मुसलमानों के पास से आ रहे हो। हालांकि देहली में इस्लामी हुकूमत थी और सारे ही मुसलमान थे लेकिन इन मुसलमानों से पहले जो राज करने वाले थे, उनका भी यही हाल था। तो मुसलमान और पहले गैर मुस्लिम में कोई फ़र्क नहीं था। तो मुसलमान और पहले भी यहां थे। लेकिन अब जो उनके हालात में तब्दीली आयी है वह किसी सच्चे मुसलमान के पास जाने से ही आयी है। यह इस गैर मुस्लिम ने समझा। अब आज के मुसलमान का हाल बाजार में जाकर देखें कि मुसलमान के बारे में एक किसान और व्यापारी और बाजार के इन्सान का क्या ख्याल है। आज हर एतबार से कोई हमारे पर भरोसा और एतमाद करने के लिए तैयार नहीं है।

हज़रात मैं क्या कहूँ मेरा मुंह तो है नहीं कि कुछ कह सकूँ। आज जो हालात दुनिया में हो रहे हैं वह आने वाले नहीं। बल्कि खुद हमारी मस्जिदों से बाहर आ गए हैं। वह सारे हालात गफ़्लत के और इल्हाद और बेदीनी के और दीनी कमियों के और मैं आगे बढ़कर कहूँ कि ऐसे हालात पेश आ रहे हैं कि मुश्किल से कोई दीन पर बाकी रहे। हदीस के फरमान के मुताबिक़ दीन पर बाकी रहना हथेली में आग रखने के बराबर हो गया है। आज हवाओं में कुछ मासियत है। हवाओं से ख़राबी फैल रही है। इस वक्त सारी दुनिया का रुझान और कुछ जगहों पर खुलकर और कुछ जगहों में अन्दरूनी एतबार से यह हालात हो रहे हैं कि दीन से दूरी की हवा तेज़ी से चल रही है। इस वक्त हम जिस दुनिया में क़दम रख रहे हैं वह ऐसा है कि आने वाला ज़माना पिछले ज़माने से बहुत सख्त है। इस वक्त के लिए हम इतनी मेहनत कर लें, अपनी झोली नमाज़ों से भर लें, इबादत, तिलावत, ज़िक्र वगैरह से भरें और ख़ूब भरकर ले जाएं ताकि पूरा साल बल्कि पूरी ज़िन्दगी पुर्ख्ता हो जाए। इसकी मेहनत कर लें, यहां अल्लाह के बहुत बड़े बन्दे के साथ में रहने की तौफ़ीक हुई है। जहां हर वक्त अल्लाह और उसके रसूल का नाम लिया जाता है और इस तरह ज़िक्र होता है जैसे

शहद की मक्खियां भिनभिनाती हों। बहुत कम होंगे जो आधा कुरआन पढ़ते होंगे। बल्कि उससे ज्यादा ही यहां पढ़ने वाले होंगे। ऐसे माहौल में अगर मेहनत करके हम एक ज़ब्बा और नूरानियत और बैटरी का पावर लेकर यहां से गए तो खुद भी बड़े माहौल में हिफाज़त से रह सकेंगे, बल्कि इतनी मेहनत करके जाएंगे कि पूरा माहौल हमसे नफ़ा हासिल करने वाला बने।

एक तर्जुबे की बातः

एक बात तर्जुबे की है और वह यह है कि अगर रमज़ान सही से गुज़र गया तो सारा साल अच्छे से गुज़रता है। 'ज़ादुल मआज़' में भी लिखा है कि सिर्फ़ इतनी ही बात नहीं है जो ऊपर कही गई है, बल्कि बात यह है कि जुमा मीज़ान (माप) है हफ़ते का और रमज़ान मीज़ान है साल का और हज मीज़ान है पूरी उम्र का। जिसका जुमा अच्छा गुज़रा उसका पूरा हफ़ता अच्छा गुज़रेगा, जिसका रमज़ान अच्छा गुज़रा उसका पूरा साल अच्छा गुज़रेगा। जिसका हज अच्छा गुज़रा उसके हिस्से अच्छी तरह गुज़रे उसकी उम्र अच्छी तरह गुज़रेगी। अगर हमने इन औक़ात के अन्दर सही मेहनत कर ली तो हम दूसरों को भी मुतास्सिर कर सकेंगे और आने वाले इन हालात में जो हिन्दुस्तान में और हमारे इलाके में शिद्दत से पेश आने वाले हैं उसमें भी हम जम सकेंगे।

मुकाबले के लिए ज़रूरी है कि पहले से इन्तज़ाम हो। उसके लिए हथियार हों और वह मज़बूत हों। हाथ हो और वह मज़बूत भी हों, वरना अगर हाथ कमज़ोर हों या हथियार कमज़ोर हों तो मुकाबले के वक्त वह क्या काम दे सकेगा। तो हथियार भी हो और अच्छे हथियार हो और हाथ भी मज़बूत हो और जगह भी सही हो, तब हथियार सही काम कर सकते हैं। तो अगर हम यहां मेहनत सही करेंगे तो वह विपरीत हालात में काम करेगी। बेशक नमाज़ गुनाहों से रोकने वाली है और तमाम लाज़िम और मुतअद्दी ख़ासियत की हामिल है लेकिन वह सलात "नमाज़ में कोताही करते हैं" न हो।

और रोज़ा यकीनन ढाल है लेकिन जब तक उसके अन्दर सुराख़ न हो। सुराख़ वाली ढाल हरगिज़ काम नहीं दे सकती है तो मेहनत करके इबादत के लाज़मी और मुतअद्दी पहलू हम हासिल करने वाले बनें। अल्लाह तआला हम सबको अमन की तौफ़ीक अता फ़रमाए आमीन।

કુરાન બારથાન દરથા ડશબોર્ડ સંવેશ

હિન્મત મૌલાના સૈયદ મુહમ્મદ રાબે હસની નદવી

વો રમજાન કા બરકતો વાળા મહીના થા ઔર શબ-એ-કદ્ર થી જબ અલ્લાહ રબુલ ઇજ્જત કા કલામ બડી આન-બાન કે સાથ લૌહ-એ-મહફૂજ સે આસમાન વ દુનિયા મેં ઉતારા ગયા ઔર ઉસ કલામ કે નૂર સે સારા આસમાન જગમગા ઉઠા। વો ભી રમજા નહીં કા મુબારક મહીના થા જબ અલ્લાહ તઆલા કે નૂર સે યે જામીન મામૂર હુઈ। સદિયોં સે મહૂરમ ઇન્સાન પર અલ્લાહ કે નૂર કી બારિશ હોને લગી। રહમત-એ-આલમ, જગનાયક હજરત મુહમ્મદ મુસ્તફા (સ0અ0) કે મુબારક સર પર નબૂવત વ રિસાલત કા તાજ રખા ગયા। યે તાજ આપ (સ0અ0) કી હસ્તી પર એસા સજા કિ કાયનાત કે ખાલિક ને ઉસ પર નબૂવત વ રિસાલત કે ખાત્મે કા ફેસલા ફરમા દિયા।

કુરાન કરીમ ઔર રમજાનુલ મુબારક કે બીચ એસા હસીન સંબંધ હૈ કિ ઇસ મુબારક મહીને કે બારે મેં સોચને હી સે અલ્લાહ કે કલામ કે નગ્મે ઔર જામજામે કાનોં મેં રસ ઘોલને લગતે હું। રમજાન કી રાત મેં નફિલેં પઢને કો એક મુસ્તકિલ ઇબાદત ઘોષિત કરકે અલ્લાહ કે રસૂલ (સ0અ0) ને કુરાન કે સાથ ઇસ મહીને કો હમેશા કે લિયે જોડું દિયા। જિબ્રિલ અમીન સબસે પહલે ઇસ મુબારક મહીને મેં કુરાન કી સૌંગાત લેકર આયે થે। ફિર હર રમજાન મેં ખાસકર કુરાન કરીમ સુનને સુનાને કે લિયે તશીફ લાને કા નિયમ બન ગયા।

કુરાન કરીમ કે જરિયે હુજ્જત તમામ હોતી હૈ, ઇરશાદ હૈ:

“અલ્લાહ ઔર ઉસકી આયતોં કે બાદ અબ યે કિસ બાત પર ઈમાન લાયેંगે।”

યાનિ જબ કુરાન હી પર ઈમાન ન લા સકે તો અબ ક્યા ખાક ઈમાન લાયેંગે! કુછ ઇસી તરહ રમજાન સે ભી અલ્લાહ કી હુજ્જત તમામ હોતી હૈ। હજરત જિબ્રિલ (અલૈ0) ને ફરમાયા, “વો શાખ્સ હલાક હો જાયે જિસે રમજાન કા મહીના મિલા ફિર ભી ઉસકી મગફિરત ન હો

સકી।” ઇસ બદ્દુઆ પર રસૂલુલ્લાહ (સ0અ0) ને ‘આમીન’ ફરમાયી। યાનિ રહમતોં ઔર બરકતોં કે ઇસ મહીને મેં ભી અગાર કોઈ બદનસીબ મગફિરત સે મહૂરમ રહા તો ફિર કબ મગફિરત કા મુસ્તહિક (લાયક) હો સકતા હૈ?!

કુરાન કરીમ મુકમ્મલ જૂદ વ કરમ હૈ। ઇસી કલામ સે ઇન્સાનિયત કા દામન મુંહ માંગી મુરાદોં સે ભર દિયા ગયા। ઇસી તરહ રમજાન કા મુબારક મહીના ભી સખાવત (દાન) કે રાસ્તે ખોલતા હૈ। રસૂલુલ્લાહ (સ0અ0) વૈસે ભી દુનિયા જહાં કે સખી થે। ઇસ પર અગર રમજાન મુબારક કા મહીના હો તો સખાવત કી કૈફિયત હી કુછ ઔર હોતી હૈ। રાવી (હદીસ કી રિવાયત કરને વાળા) કે શબ્દ હૈ: “બારિશ સે પહલે જો ઠન્ડી-ઠન્ડી સુકૂન બખ્શા હવાએ ચલતી હું ઔર પૂરે વાતાવરણ પર ઇસ તરહ છા જાતી હું કિ કોઈ વ્યક્તિ ઇસસે વંચિત નહીં રહતા, આપ કી સખાવત હવાઓં સે ભી બઢકર પૂરી ફિજા પર છાયી રહતી, ખાસતૌર પર ઇસ મુબારક મહીને મેં જબ હજરત જિબ્રિલ (અલૈ0) સે મુલાકાત કા સિલસિલા રહતા તો ફિર સખાવત વ ફૈયાઝી કી કોઈ ઇન્ટિહા ન રહતી।” અલ્લાહ રબુલ ઇજ્જત કી તરફ સે ઇસ મુબારક મહીને મેં જૂદ વ કરમ કે જો દરવાજે આપ (સ0અ0) હમ પર ખોલ ગયે થે આપ (સ0અ0) કી બખ્શિશ વ સખાવત અલ્લાહ કે ઇસી ઇનામ કા અમલી એતરાફ થી।

કુરાન કરીમ સીધી રાહ પર ડટ જાને કા જો હૌસલા પૈદા કરતા હૈ ઔર હર તરહ કે હાલાત કા સામના કરને કી જરૂરત બખ્શાતા હૈ: “આપ કાફિરોં કા કહના ન માનિયે ઔર કુરાન કે જરિયે ઉનસે નિહાયત જાબરદસ્ત મુકાબલા કીજિયે।”

ઇસી તરહ રમજાન કા મહીના ભી સીધી રાહ કે અર્થ સે અમલી તૌર પર જોડતા હૈ। હદીસ પાક મેં ઇસ મુબારક મહીને કો “શહરુસ્સબ્ર” (સબ્ર કા મહીના) કહા ગયા હૈ।

कुरआन करीम की तिलावत दिलों में नर्मा भी पैदा करती है। कभी—कभी आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं। खुद अल्लाह रब्बुल इज़्जत ने उन बन्दों की तारीफ़ फ़रमायी है जो उसके कलाम को सुनकर रोते हैं और सजदों में गिर पड़ते हैं: “अल्लाह के ये हिदायत पाये हुए बन्दे वो हैं जिनके सामने रहमान की आयतें तिलावत की जाती हैं तो वो रोते हुए अल्लाह के सामने सजदे में गिर जाते हैं।”

इसी तरह रमज़ान के रोज़े भी भूख व प्यास का एहसास दिलाकर उन नादारों के लिये दिलों में नर्मा करते हैं जो ज़िन्दगी की ज़रूरतों तक से महरूम हैं।

कुरआन के नुज़ूल (अवतरित) होने के ज़माने में कहानत का दरवाज़ा बन्द हो गया था। किसी शैतान की मजाल नहीं थी कि कोई ख़बर चोरी छिपे उचक ले। अल्लाह तआला का इरशाद है: “शैतान को सुनने ही से अलग—थलग कर दिया गया।” इसी तरह रमज़ान के महीने में भी शैतान कैद कर दिये जाते हैं और नेकी की राह और आसान कर दी जाती है।

कलाम पाक की तिलावत और दुआ में किस कदर गहरा संबंध है ये हर कोई जानता है। नबी करीम (स0अ0) ख़ासकर तहज्जुद की नमाज़ में तिलावत के दौरान जहां रहमत की आयत आती वहां अल्लाह से रहमत की दुआ फ़रमाते, जहां अज़ाब की आयत आ जाती वहां अल्लाह के अज़ाब से पनाह चाहते थे, बिल्कुल इसी तरह रमज़ान के रोज़ों और दुआ की कुबूलियत में बड़ा मज़बूत संबंध है। अल्लाह के रसूल (स0अ0) का इरशाद है: “रोज़ेदार की दुआ रद्द नहीं होती।” मुबारक महीना बिल्कुल करीब है। ये “शहरुस्सियाम” के साथ “शहर—ए—कुरआन” भी है। नबी करीम (स0अ0) का इरशाद है: “रोज़ा और कुरआन बन्दे की सिफारिश करेंगे।” खुशनसीब हैं वो जो रोज़ों से तक़वे की बुलन्दियां तय करते हैं और कलाम पाक की तिलावत से अल्लाह की मुहब्बत में तरक्की करते हैं। यहीं लोग रोज़े व कुरआन की सिफारिश के मुस्तहिक होंगे।

इस पूरी ज़मीन पर अल्लाह का कलाम (कुरआन) एक ऐसा पाक कलाम (वाणी) है जिसके आधार पर इस ज़मीन को आसमानों पर गर्व करने का अधिकार मिलता है। कुरआन मजीद पूरी मानवता की नजात (मुक्ति) का

साधन है, सही राह बतलाने वाला है, यद्यपि अमली तौर पर यह उन लोगों के सम्पूर्ण हिदायत है जो अल्लाह का सम्मान करते हैं, उसके आदेशों की पूर्ति करते हैं। कुरआन मजीद में बताए गये आदेशों पर अमल करने से पहले ज़रूरत इस बात की होती है कि इन्सान कुरआन के हक़ को समझने की कोशिश करे। नीचे हम क्रमवार कुरआन के हक़ का वर्णन कर रहे हैं:

1— ईमान 2— अज़मत (महानता) 3— तिलावत (उच्चारण) 4— हिफ़ज़ 5— समझ 6— अमल 7— तब्लीग

आज हमें कुरआन मजीद के इन बुनियादी अधिकारों की रोशनी में अपना विश्लेषण करने की आवश्यकता है कि हमने किस हद तक इन अधिकारों को पूरा किया है। कुरआन मजीद का पहला हक़ यह है कि इन्सान उस पर ईमान लाए, इस बात का यकीन हो कि यह अल्लाह की आखिरी किताब है और मुक्ति का साधन है। इसका कोई अक्षर, ज़ेर—ज़बर सब अल्लाह का नाज़िल (अवतरित) किया हुआ है, इसमें कोई बदलाव संभव नहीं है और इसकी हिफ़ाज़त का वादा अल्लाह तआला ने किया है। अगर हम गौर करें तो मालूम होगा कि मुसलमानों की एक बड़ी संख्या ऐसी भी मौजूद है जो कुरआन के हक़ को जानना तो बहुत दूर की बात है, न वह अल्लाह के कलाम से परिचित है, न उसकी महानता से, अगर उनसे कुरआन मजीद पढ़ने की मांग भी की जाए तो पता चलता है कि वे अरबी लिपि ही से परिचित नहीं।

निसंदेह कुरआन के समर्थकों के लिए मुस्लिम समाज की यह ख़स्ताहाली अफ़सोसनाक बात है। हमें यह तय करना चाहिए कि हमारे समाज का हर—हर बच्चा कम से कम कुरआन मजीद पर पुख्ता ईमान रखने के साथ तजवीद के साथ इसकी तिलावत करने के लायक भी हो, ताकि किसी दर्जे में हम कुरआन मजीद के बुनियादी हक़ अदा करने वाले बन जाएं। तजवीद की मांग यह है कि कुरआन मजीद सुन्नत के अनुसार पढ़ा जाए। यह बहुत महत्वपूर्ण चीज़ है, क्योंकि अगर कोई शख्स इस तरह तिलावत नहीं कर सकता तो मानो वह कुरआन का हक़ अदा करने वाला नहीं बन सकता।

कुरआन के हक़ में चौथा अहम हक़ “हिफ़ज़ कुरआन” है। नमाज़ जो कि इस्लाम का आधारभूत हिस्सा है, बिना कुरआन की तिलावत के उसको पूरा

करना मुमिन नहीं। इसलिए ज़रूरत इस बात की है कि हममें से हर व्यक्ति कम से कम कुछ सूरतें हर हाल में याद कर ले ताकि उसकी नमाज़ सुन्नत तरीके के मुताबिक़ अदा हो सके, अगर ऐसा नहीं है तो फिर यह बड़ा अन्याय होगा, फिर दूसरी तरफ़ नमाज़ का हक़ न अदा करना और उसके साथ ईमान का भी हक़ न अदा करना।

हिफ़्ज़ कुरआन के इस लाज़िमी जु़ज़ के अलावा समाज में कुछ ऐसे लोगों का तैयार होना और इस काम की तरफ़ ध्यान दिलाना भी बहुत ज़रूरी है कि हमारे बच्चों की एक बड़ी संख्या ऐसी हो जिनके सीने पूरी तरह से कुरआन के हिफ़्ज़ से भरे हों। कुरआन की हिफ़ाज़त का यह एक बहुत बड़ा साधन है। इस नेमत के सीने में सुरक्षित होने से हाफ़िज़ कुरआन की हिफ़ाज़त भी अल्लाह तआला के ज़िम्मे हो जाती है और उसके मां-बाप व ख़ानदान वालों के लिए भी यह सम्मान की बात बन जाती है, जो कि दुनिया की बड़ी से बड़ी डिग्री पाने के बाद भी संभव नहीं।

कुरआन के हक़ में पांचवा हक़ “कुरआन को समझने का है। यह भी कुरआन मजीद के बुनियादी हक़ में से है कि हम कुरआन मजीद के तक़ाज़ों को और उसकी मांगों को जानें, उनको समझने की कोशिश करें, गौर करें कि कुरआन करीम हमसे कौन सी ज़िन्दगी की मांग करता है, वह हमसे किन विशेषताओं की बात करता है, कैसा व्यवहार चाहता है।

छठा अहम हक़ “कुरआन पर अमल” करने का है, वाक्या यह है कि आज इस्लामी समाज से कुरआन मजीद का यह अमल हक़ भी ओझल होता जा रहा है। इस हक़ को अदा करने के बाद मुस्लिम समाज की जो अख़लाकी बुलन्दी होनी चाहिए थी, आज हमारा समाज उससे बिल्कुल दूर नज़र आता है। हर तरह की बदअख़लाकी, बेहयाई, अश्लीलता, झगड़े, गालियां, गंदियां, नशे में मस्त होना, कत्ल व ग़ारतगरी जैसी सोहाने रुह हरकते इन अफ़राद का पेशा नज़र आती हैं, जो कि एक ऐसी मुक़द्दस किताब के हामिल समझे जाते हैं जिसमें जगह-जगह पर बुराइयों पर सख्त नकीर की गयी है और उनके भयानक नतीजों से आगाह किया गया है।

आज अगर एक तरफ़ हुक्म कुरानी पर नज़र डाली जाए और दूसरी तरफ़ मुसलमानों की हालत ज़ार का जायज़ा लिया जाए तो मालूम होगा कि कुरानी तालीमात से मुसलमानों की मौजूदा तर्ज़ ज़िन्दगी का कोई जोड़ ही नहीं। कुरआन मजीद में इस बात की ताकीद की गयी है कि झूठ न बोलो, झूठ बोलने वाले पर खुदा की लानत होती है, मगर आज हम देखते हैं कि हर शख्स आसानी से झूठ बोलता है, कुरआन मजीद का हुक्म है कि अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करो, ज़बान की हिफ़ाज़त आखिरत में मग़फिरत का ज़रिया है, मगर आज हम देखते हैं कि इस बारे में भी हम एहतियात से काम नहीं लेते हैं। कुरआन मजीद का हुक्म है कि विरासत को शरई एतबार से बांटो, बहनों को उनका हिस्सा दो, मगर आज हम देखते हैं कि बेशुमार मुस्लिम घरानों में लड़ाई झगड़े की वजह विरासत की तक़सीम शरीअत के मुताबिक़ न करना है, जबकि दीन-ए-इस्लाम में विरासत के हुक्मों को इस सख्ती के साथ बयान किया गया है कि शायद ही किसी दूसरे फ़र्ज के बारे में इतना एहतिमाम किया गया हो। कुरआन मजीद में किसी भी एक फ़र्ज के सारे हुक्म की तफ़सील पूरे तौर पर एक जगह मिलना मुश्किल है, मगर विरासत की तफ़सील का एकलौता मसला ऐसा है उसकी सभी तफ़सीलों को खोल-खोलकर एक ही जगह बयान कर दिया गया है। इसी तरह कुरआन मजीद का हुक्म है कि मुसलमान आपस में लड़ाई न करें, झगड़ों से दूर रहें, मगर आज हम देखते हैं कि हमारी कमाइयों का ज़्यादातर हिस्सा अदालतों की नज़र हो जाता है, जबकि हदीस शरीफ़ में फरमाया गया कि आपस में लड़ाई उस्तरे की तरह है, जिस तरह उस्तरे से बाल मूँड दिये जाते हैं, उसी तरह आपस की लड़ाइयों से दीन ख़त्म हो जाता है। कुरआन मजीद में साफ़ तौर पर यह भी हुक्म दिया गया है कि आपस की लड़ाई में तुम्हारी कोई हैसियत बाक़ी नहीं रह जाएगी, ज़िल्लत व रूस्वाई तुम्हारा मुकद्दर बन जाएगा। इसी तरह कुरआन मजीद का यह भी हुक्म है कि माल जमा करके न रखो। अल्लाह तआला जितना तुमको दे, उतना तुम उसकी राह में ख़र्च करो। अगर कोई ऐसा नहीं करता, बल्कि बैंक बैलेंस बनाता है, माल जमा करता है, और उसकी ज़कात अदा नहीं करता,

उसके बारे में कठोर शब्द आए हैं कि ऐसे लोगों को दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दे दो। उनको यह बताओ कि उनको पहलुओं को क्यामत के रोज़ दाग़ा जाएगा। वे अल्लाह की रहमत के हरगिज़ सज़ावार नहीं होंगे। इसी तरह कुरआन मजीद का हुक्म है कि हम किसी से बदगुमानी न करें, क्योंकि कभी—कभी बदगुमानी बड़े—बड़े झगड़ों की वजह बन जाती है। इसी तरह कुरआन मजीद का हुक्म था कि हम अपने पड़ोसी की इज़्जत करें और उसके साथ अच्छा बर्ताव करें यहां तक कि अगर सफ़र में हमारे साथ कोई शख्स बैठा है तो उसको भी पड़ोसी बताया गया और कहा गया कि उसका भी ख्याल रखना चाहिए, मगर आज हममें से बहुत कम लोग होंगे जो इन हुक्मों पर गौर करके अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा लें तो पता चलेगा कि हकीक़त में हम कुरानी ज़िन्दगी से बहुत दूर जा चुके हैं। यही वजह है कि आज कुरआन मजीद पर अमल न होने की वजह से आलमी मन्ज़रनामें पर मुसलमानों की सूरतेहाल बद से बदतर होती जा रही है। कुरआन मजीद इस हकीक़त की तरफ़ पहले ही इशारा कर चुका है:

“और तुम जिस मुसीबत से दो—चार होते हो वह तुम्हारे हाथों की कमाई है और कितनी चीज़ें वह दरगुज़र कर जाता है।” (सूरह शूरा: 30)

सातवां हक़ “कुरआन की तब्लीग़” का है। मौजूदा हालात को देखते हुए ईमान वालों की ज़िम्मेदारी यह है कि वे पहले खुद कुरआन मजीद से अपना संबंध ताज़ा करें, और जो लोग कुरआन की शिक्षा से कटकर दुनिया की बुराइयों में पड़े हैं उन्हें दोबारा जिलाएं, उन्हें “तुममें सबसे बेहतर शख्स वह है जो कुरआन सीखे और सिखाए” सुनाएं और परेशान हाल दुनिया को उसकी हकीक़त से परिचित कराके हकीकी अमन व सुकून अता करें। आज जिस तरह बाज़ारी लोगों की एक आवाज़ पर पूरी कौम झामों, नुमाइशों, तफ़रीह, खेलों से आनन्दित होने के लिए निकल पड़ती है, ठीक उसी तरह या उससे भी ज़्यादा दिलचस्पी के साथ हमारी कौम कुरआन मजीद के हल्कों और उसकी निस्खत पर सजाई जाने वाली महफ़िलों में शरीक होने को सवाब का काम समझे। आज दीनी महफ़िलों की ओर लोगों का ध्यान न देना और रुचि न होने का एक बड़ा कारण यह भी है कि

अभी वे दीन की हकीक़त को ही नहीं जानते हैं। लिहाज़ा ज़रूरत इस बात की है ज़हन में पैदा होने वाले बुरे माददे को दूर करने की कोशिश करें, अपने अमल व किरदार से कुरआन मजीद की तालीमात को लोगों के सामने पेश करें, हमारी ज़िन्दगी ऐसी होनी चाहिए कि उसको देखकर लोगों के अन्दर एक शौक व ज़ज्बा पैदा हो। लोग हमें देखकर दूर ही से कहें कि यह नबी वाले लोग हैं। इनके अन्दर अख़लाक़ है। उनके यहां तर्ज़ मुआशरत है। एक दूसरे से मुहब्बत है, गैरों के साथ हमदर्दी है, यही वे चीज़ें हैं जिनसे यह बुलन्दियों पर बैठे हैं, याद रहे कि यदि अभी होश में न आए तो एक दिन वह आएगा कि अल्लाह तआला उन नेमतों को छीन लेगा और हमारी जगह एक ऐसी कौम लाएगा जो हम जैसी न होगी, क्योंकि अल्लाह तआला का कानून है कि वह ऐसी कौम को ज़्यादा देर तक ज़मीन में मोहलत नहीं देता, इतिहास के पन्ने गवाह हैं कि जब भी मुसलमानों ने ग़लत राह अपनायी, ईमानी अख़लाक़ से किनारा किया, तब उन्हें ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना करना पड़ा। बग़दाद की ईंट से ईंट बजा दी गयी, वह उन्दुलुस जो कभी मुसलमानों का केन्द्र था, वहां भी इस्लामी मूल्यों को ऐसा रौदा गया कि कलिमा पढ़ने वालों को मिटा दिया गया।

आज जब हर तरफ़ ईमान के सौदागर अपनी साज़िशी जाल बिछाए हुए हैं, इन हालात में ईमान वालों की ज़िम्मेदारी और बढ़ जाती है कि हम अपने हालात का जायज़ा लें, हमारी ज़िन्दगियों में ईमान की जो चमक ख़त्म हो रही है उसको ताज़ा करें। रस्मों और अनावश्यक कामों में उलझ कर अपने समय को नष्ट करना इन संगीन हालात में कोई समझदारी की बात नहीं। अगर हमारी ज़िन्दगी की रफ़तार यही रही तो याद रहे कि हम न कभी इस दुनिया में इज़्जत पा सकते हैं और न आखिरत में इज़्जत पा सकते हैं। यह अल्लाह के कलाम के हक़ हैं, अगर इनको अदा किया गया तो अल्लाह की रहमत बारिश की तरह से बरसेगी, और अल्लाह की ऐसी मदद आएगी कि उसकी तरफ़ ख्याल भी न गया होगा। ज़रूरत इस बात की है कि हम कुरआन पाक की अहमियत को समझें और उसके हक़ को अदा करें।

ଆଇନା-ଏ-ନବବୀ

ମୌଲାନା ଅବ୍ଦୁଲ୍‌ଲାହ ହସନୀ ନଦ୍ଵୀ (୨୫୦)

ଅଲ୍‌ଲାହ ତଆଳା ନେ ଅପଣି ମଖଲୂକାତ ମେଂ ଇନ୍ସାନ କୋ ଅଶରଫ କିଯା ଓ ଇନ୍ସାନଙ୍କୁ ମେଂ ଅଭିଯା କା ଇନ୍ତିଖାବ କିଯା ଓ ଅଭିଯା ବ ମୁରସଲୀନ ମେଂ ରସୂଲୁଲ୍‌ଲାହ (ସେୟାର) କୋ ମୁମତାଜ୍ କିଯା ଓ ଖାତୁମନ୍‌ବିଯିନ ବନାଯା, ରହମତୁଲ ଲିଲ ଆଲମୀନ ବନାଯା ଓ ସୈୟଦ ଲଲ୍‌ଦେ ଆଦମ ବନାକର କ୍ରୀଯାମତ ତକ କେ ଲିଯେ ଐଲାନେ ଇମାମତ ଫରମା ଦିଯା । ଅବ କୋଈ ନବୀ ନହିଁ ଆୟେଗା । ଜୋ ଦାଵା କରେଗା ଵହ ଝୁଠା ଓ କଜ୍ଜାବ ହେଗା । ଇସିଲିଏ ଇସକା ଇନ୍ତିଜାମ କର ଦିଯା ଗଯା କି କୁରାନ ମଜୀଦ ବାକୀ ରହେଗା । ନୂର ବିଖରତା ରହେଗା ଓ ରସୂଲୁଲ୍‌ଲାହ (ସେୟାର) କୀ ସୀରତ ଓ ତାଲୀମାତ ଭି ରହେଗି ଓ ନୂରାନୀ ଫିଜା କାଯମ କରତି ରହେଗି । ଜ୍ମାନେ କେ ତକାଜୋଙ୍କ କା ଖ୍ୟାଲ କରତେ ହୁଏ ଦୋନୋଙ୍କ କେ ଇନ୍ସାନିଯତ କେ ସାମନେ ପେଶ କିଯା ଜାତା ରହେଗା । ଜିସ ଜ୍ମାନେ ମେଂ ଜିସ ଉତ୍ସୁବ୍ବ ମେଂ ପେଶ କରନେ କୀ ଜୁରୁରତ ହୋଗି । ଏସେ ସାହବେ ଦିଲ ବ ସାହବେ କଳମ ପୈଦା ହୋତେ ରହେଗେ ଜୋ ଇନ ଦୋନୋଙ୍କ କେ ନୂର ସେ ରୋଶନୀ ଫୈଲାତେ ରହେଗେ ।

ଅଲ୍‌ଲାହ ତଆଳା କୀ ତରଫ ସେ ଅତା କରଦା ଯହ ଦୋ ନୂର ଏସେ ହୁଏ କି ଇନ୍ସାନେ ନିଷ୍ପତ୍ତି ଜୋଡ଼ନେ ଵାଲା ହର ଶାଖ୍ସ ମହଫୂଜ ହୋଗା, ମହବୂବ ହୋଗା, ଉସକା ମକାମ ବଲନ୍ଦ ହୋଗା, ଇସିଲିଏ କି କୁରାନ ମଜୀଦ ଅଲ୍‌ଲାହ ତଆଳା କା କଳାମ ହୈ । ଉସକୀ ହିଫାଜତ କୀ ଜିମ୍ମେଦାରୀ ରବୁଲ ଆଲମୀନ ନେ ଅପଣେ ଜିମ୍ମେ ଲି ହୈ ଓ ନବୀ (ସେୟାର) କୀ ଜିନ୍ଦଗୀ କୁରାନ ମଜୀଦ କୀ ଅମଲୀ ତଫ୍‌ସିର ହୈ । ଲିହାଜା ଜୋ ଶାଖ୍ସ ଇନ ଦୋନୋଙ୍କ କେ ଅପନା ତାଲିକୁ ମଜ୍ବୁତ କରେଗା ଗୋଯା ଵହ ଭି ରବୁଲ ଆଲମୀନ କୀ ହିଫାଜତ କେ ହିସାର ମେଂ ମହଫୂଜ ହୋ ଜାଏଗା ।

ତମାମ ଅଭିଯାଏ କିରାମ ମେଂ ହୁଜୁର ଅକରମ (ସେୟାର) କୀ ଜ୍ଞାତ ଵାଲା ସିଫାତ କେ ଯହ ଇନ୍ତିଯାଜ୍ ହାସିଲ ହୈ କି ଆପକୀ ଏକ-ଏକ ଅଦା ମହଫୂଜ ହୈ, ଆପକୀ ଏକ-ଏକ ବାତ ମହଫୂଜ ହୈ, ଆପକୀ ଏକ-ଏକ ଚୀଜ୍ ମହଫୂଜ ହୈ, ଅଗର କୋଈ ଉନକୀ ଚୀଜୋଙ୍କ ମେଂ ତବ୍ଦିଲୀ କରନା ଚାହେ ତୋ ଭି ନହିଁ କର ସକତା । ଦୁନିଆ କେ ତମାମ ଦାନିଶଵରାନ ଭି ମିଳକର ଯହ ଫୈସଲା କରନା ଚାହେ କି ହମ ସୁନ୍ନତେ ନବବୀ

(ସେୟାର) କୋ (ନଜ଼ିବିଲାହ) ବଦଲ ଡାଲେଂଗେ ତବ ଭି ସୁନ୍ନତ ଵହି ରହେଗୀ ଯା ବାଜ୍ ନୟ ଚୀଜୋଙ୍କ କେ ଫେହରିସ୍ତ ଭି ସୁନ୍ନତେ ନବବୀ ମେଂ ଶାମିଲ କରନା ଚାହେ ତୋ ଭି ଯହ ନାମୁମକିନ ହୈ । ସୁନ୍ନତ ଵହି କାମ ହୋଗା, ଜିସକୋ ଅଲ୍‌ଲାହ କେ ରସୂଲ (ସେୟାର) ନେ ନିଷ୍ପତ୍ତ ହାସିଲ ହୋ । ମସଲନ ଆପ (ସେୟାର) ନେ ମିସ୍ଵାକ କୀ ଵହ ସୁନ୍ନତ ହୋ ଗୀଁ, ଟଖନେ କେ ଊପର ପାୟଜାମା ସୁନ୍ନତ ବତାଯା ତୋ ଵହ ମସନ୍ନ ଅମଲ ହୁଆ । ଅବ ଅଗର ସାରୀ ଦୁନିଆ ଭି ଟଖନେ କେ ନୀଚେ ପୈଜାମା କରାଏ ତୋ ସୁନ୍ନତ ନହିଁ ବଦଲ ସକତି । ସୁନ୍ନତ ଅପଣି ଜଗହ ଉସି ସୁରତ ମେଂ କାଯମ ରହେଗି । ଇସମେ କୋଈ ଫର୍କ ପଡ଼ନେ ଵାଲା ନହିଁ ହୈ । ଇସିଲିଏ କି ଯହ ଅଲ୍‌ଲାହ କେ ନବୀ କୀ ସୁନ୍ନତ ହୈ ଓ ଆପ (ସେୟାର) ଅଲ୍‌ଲାହ କେ ମହବୂବ ବ ମକବୂଲ ନବୀ ହୈ । ଔର ଯହ ନବୀ ମାମୂଲୀ ନହିଁ ହୈ ବଲିକ ଏସେ ହୈ କି ଜର୍ଜ-ଜର୍ଜ ଇନ୍ସେ ମୁହବ୍ବତ କରତା ହୈ । ପତ୍ତା-ପତ୍ତା ଇନ୍ସେ ମୁହବ୍ବତ କରତା ହୈ । ଏକ-ଏକ ଶଜର ବ ହଜର ଇନ୍ସେ ମୁହବ୍ବତ କରତା ହୈ । କ୍ୟାଂକି ଆପ (ସେୟାର) କୀ ଜାତେ ଅକଦସ ହୀ କେ ହର ଏକ କୋ ନଈ ଜିନ୍ଦଗୀ ନସିବ ହୁଈ ହୈ ।

ଆଜ ଦୁନିଆ ମେଂ ଜହାନ ଭି ଖୈର ହୈ ଵହ ହକୀକତ ମେଂ ରସୂଲ ପାକ (ସେୟାର) କେ ଵାସ୍ତେ କେ ହୈ । ଜୋ କୁଛ ଭି ହୈ ଵହ ଆପକା ହୈ । ଇସିଲିଏ ଆପକୀ ସୁନ୍ନତ କୋ କୋଈ ନହିଁ ବଦଲ ସକତା । ଆପକୀ ସୁନ୍ନତ ଯକ୍ସା ତୌର ପର ତମାମ ଆଲମ ମେଂ ଯୁଣ ହୀ ଚମକତି ରହେଗି । ଆପ ମରାକଶ କେ ମଲେଶିଯା ତକ ଚଲେ ଜାଏଂ ତବ ଭି ଆପକୋ ସୁନ୍ନତ ମେଂ କୋଈ ବଦଲାବ ନହିଁ ମିଳେଗି । ଲେକିନ ଜୋ ସୁନ୍ନତ ନହିଁ ହୈ ଵହ ହର ଜଗହ ବଦଲତି ରହତି ହୈ । ରଂ ବିରଂଗୀ ହୋତି ହୈ । ବଂଗାଳ କୀ ଅଲଗ, କଶ୍ମୀର କୀ ଅଲଗ ଓ ପଂଜାବ କୀ ଅଲଗ ।

ତମାମ ଇନ୍ସାନିଯତ ପର ଅଲ୍‌ଲାହ କେ ରସୂଲ (ସେୟାର) କା ଯହ ଏକ ଅଜୀମ ଏହସାନ ହୈ କି ଆପ (ସେୟାର) ନେ ସାରେ ଇନ୍ସାନଙ୍କୁ କେ ଏକ ରଂ ମେଂ ଢାଲ ଦିଯା । ଏକ ଲଡ଼ି ମେଂ ପିରୋ ଦିଯା ଔର ସବକେ ଅନ୍ଦର ଭାଈ ଚାରା ପୈଦା ଫରମା ଦିଯା । ସବକେ ଅନ୍ଦର ମୁହବ୍ବତ ପୈଦା ଫରମା ଦିଯା । ଅବ ଜିସକେ ଅନ୍ଦର ମୁହବ୍ବତ ହୈ ଔର ଉସକୀ ଜ୍ବାନ ପାକ ହୈ ଉସକେ ରସୂଲେ ପାକ (ସେୟାର) କେ ନିଷ୍ପତ୍ତ ହାସିଲ ହୈ ଔର ଜିସକୀ ଜ୍ବାନ ଗଂଦି

है और जिसकी ज़िबान पर गंदे अल्फ़ाज़ हैं और जो खुद गंदा है उसको रसूलुल्लाह (स0अ0) से निस्बत हासिल हो ही नहीं सकती। और जब उनसे निस्बत नहीं हासिल हो सकती तो वह न सुकून हासिल कर सकता है न वह इत्मिनान हासिल कर सकता है, न उसको कभी खुशी मिल कसती है, न उसको कभी शादमानी हासिल हो सकती है। इसलिए कि ऐसे लोगों से खुशी रुठी रहती है। और वे उसको हर समय मनाने की चिन्ता रकते रहते हैं। ऐसे लोग जश्न और खुशी तो मनाते ही रहते हैं क्योंकि उनसे खुशी रुठी रहती है। लेकिन जिनको अल्लाह के रसूल (स0अ0) से निस्बत हासिल होती है उनकी हर वक्त खुशी ही खुशी रहती है। उनको हर वक्त लज्ज़त व मज़ा आता रहता है। क्योंकि हर आन वे अल्लाह के रसूल (स0अ0) की बातों पर अमल करते रहते हैं और उनकी सुन्नतों पर अमल पैरा होते हैं। जब अमलपैरा होते हैं तो सारी कायनात की दुआएं उन्हें हासिल हो जाती हैं, ज़ाहिर है कि ऐसे आदमी को खुशी हासिल होना यक़ीनी बात है जो शख्स सुन्नत पर अमल करता है सारी कायनात उसको मरहबा कहती है। और उस मरहबा कहने की वजह से उसके अन्दर एक शादमानी और मसर्रत पैदा हो जाती है और जो सुन्नत के खिलाफ़ करता है तो सारी कायनात की हर तरफ़ से फटकार बरसाई जाती है कि उस पर लानत हो, फिटकार हो यह आल्लाह के रसूल (स0अ0) का बागी है, दुश्मन है। यह नाम तो उन्हीं का लेता है लेकिन दुश्मने रसूल है। और अल्लाह के रसूल (स0अ0) को यह तकलीफ़ पहुंचा रहा है और जो अल्लाह के रसूल (स0अ0) को तकलीफ़ पहुंचाये उसका मसीहा कौन हो सकता है। अल्लाह के रसूल (स0अ0) की शान इतनी बुलन्द है कि अगर कोई भूले से, ख़ता से लाइल्मी में भी कोई तकलीफ़ दे बात कह दे तो क़ाबिले मुआख़ज़ा है। इसीलिए फ़रमाया गया कि जब रसूले पाक (स0अ0) का नाम नामी इसमे गिरमे लिया जाए तो बहुत अदब से दर्द शरीफ़ ‘सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम’ पढ़े। जब भी आप (स0अ0) का नाम नामी आये तो बिना ‘सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम’ के किसी साहिबे ईमान को ख़ामोश नहीं बैठना चाहिए। इससे एक निस्बत हासिल होती है। आप (स0अ0) ने फ़रमाया जो मुझपर एक बार दर्द भेजेगा, अल्लाह तआला उस पर दस बार रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा। इससे अंदाज़ा लगाइये कि

दस गुना सवाब सीधा—सीधा है। और ज़ाहिर है जो शख्स रसूलुल्लाह (स0अ0) के बताए हुए दुर्द व सलाम को पढ़ेगा, उस पर उतना ही अच्छा अज़ भी हासिल होगा।

ग्रज़ कि अगर यह दो निस्बतें (कुरआन व सुन्नत) किसी को हासिल हो जाएं तो वह महफूज़ हो जाता है। जो शख्स भी कुरआन करीम से ताल्लुक़ कायम करेगा और रसूले पाक (स0अ0) की जात से ताल्लुक़ कायम करेगा उसको कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकता। कोई उसका बाल भी बांका नहीं कर सकता, कोई उसको नुक़सान नहीं पहुंचा सकता। और अगर कोई नुक़सान पहुंचाना चाहेगा तो अल्लाह तआला उसको नुक़सान पहुंचाएगा और अगर अल्लाह तआला उससे बदला लेगा। इसलिए कि वह अल्लाह और उसके रसूल की निस्बत से महबूब बनाया गया है। अल्लाह का फ़रमान है कि तुम मेरे महबूब नबी (स0अ0) की चाल चलो तो महबूब इलाही बन जाओगे। ज़ाहिर है जो महबूबे इलाही बन जाए उसका कोई कुछ नहीं बिगड़ सकता है। मौजूदा दौर में जो उम्मते मुस्लिमा की हैसियत से हमारे अन्दर कमज़ोरी नज़र आ रही है वाक्या यह है कि यह कमज़ोरी इसी ताल्लुक़ के कमज़ोर पड़ने के सबब है। अगर हमारी निस्बत आप (स0अ0) से कवी होती तो हम महबूबे इलाही होते। और हमारी तरफ़ कोई भी बुरी निगाह डालने की जुर्त न करता।

आज मुसलमानों में एक बड़ा तबक़ा वह है जो रसूले पाक (स0अ0) की सुन्नतों को बिना किसी ख़ौफ़ व ख़तरे पामाल कर रहा है। और अपने तर्ज़े अमल से आप (स0अ0) को ऐसी तकलीफ़ पहुंचा रहा है कि अगर आप (स0अ0) तशरीफ़ ले आएं तो उस मुसलमान तबक़े की तरफ़ नज़र फ़रमाने से इनकार कर दें कि यह इतने नालायक़ लोग हैं कि हमारी सुन्नतों को पामाल करते हैं। हमारी नमाज़ों को छोड़ते हैं, जिसमें हमारी आंखों की ठन्डक है। हमारे कितने आमाल हैं जिनको हम पसंद करते हैं। और यह लोग उससे आराज़ करते हैं। और वह सारे काम करते हैं जिनसे हमने रोका है।

आप (स0अ0) की आदत यह भी थी कि अगर कोई आपको बुरा कहता था तो आप उसको बर्दाश्त करते थे। उसके साथ अच्छा मामला करते थे। यहां तक कि कोई यहूदी शख्स बीमार होता तो उसकी अयादत के लिये तशरीफ़ ले जाते।शेष पेज 15 पर

दीन के विलोक्ति दीवारें मजुबूत करें

मौलाना ख़ालिद सिद्दीकी नदवी ग़ाज़ीपुरी

जिस तरह पुराने ज़माने में बादशाह और नवाब अपनी हुकूमत और रियासत की हिफ़ाज़त की ख़ातिर गढ़ियाँ और किले बनवाते थे, उलमा दीन की सुरक्षा व प्रचार की ग़रज़ से मदरसे कायम करते थे। हुकूमतों और रियासतों ने भी मदरसे काएम किए। लेकिन जब उनका इक़्तिदार ख़त्म हुआ तो उनके मदरसे भी ख़त्म हो गए। जबकि उलमा के काएम करदा मदरसे जो अवामी चन्दों से चलते थे, बदस्तूर ख़िदमत अंजाम देते रहे। ऐसे मदरसे अंग्रेज़ों के ज़माने में भी थे और आज भी देश के कोने—कोने में हैं। पहले हुकूमतें मदरसों के निसाब व निज़ाम में दख़लांदाज़ी नहीं करती थीं लेकिन मुल्क की आज़ादी के बाद मदरसों के मामलों में बराबर मदाख़लत की जा रही है। जब 1950 में सेक्यूलर दस्तूर नाफ़िज़ हुआ तो समझा गया कि अब हुकूमत दस्तूर की रौ से स्कूलों में किसी ख़ास मज़हब की तालीम नहीं देगी। मुसलमानों को अपनी मज़हबी तालीम के लिए खुद मदरसे बनवाने होंगे। इस बिना पर देशभर में हज़ारों मदरसे व मकतबे कायम किए गए। लेकिन आज़ादी के बाद से हुकूमत की तरफ़ से लगातार मदरसों पर तरह—तरह की कैद लगायी जा रही हैं। पहले इन्हें दहशतगर्दी के अड़डे कहा गया और अब इनपर दाद व दहिश्त की बारिश हो रही है। मगर इसकी कीमत भी पूरी वसूल की जा रही है। तजदीदकारी के नाम पर इनके निसाब व निज़ाम को बदलने की कोशिश की जा रही है। दूसरी तरफ़ सरकारी स्कूलों में एक ख़ास मज़हब की तालीम दी जा रही है। निसाबी किताबों को तब्दील किया जा रहा है और ऐसे मज़मून निसाबे तालीम में शामिल किए जा रहे हैं जिनको पढ़कर बच्चे अपने दीन से बरगुश्ता हो जाएंगे।

ऐसे हालात में हमारा फ़रीज़ा होना चाहिए था कि हर जगह ऐसे स्कूल काएम करते जिनमें असरी तालीम के साथ इस्लामी तालीम भी दी जाती। लेकिन अफ़सोस कि हम ग़फ़लत की नींद सो रहे हैं। यह भी कम

अफ़सोसनाक बात नहीं है कि मदरसों से मुसलमानों की दूरी बढ़ती जा रही है। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार 4 प्रतिशत बच्चे मदरसों में पढ़ते हैं जबकि मदरसे वाले कहते हैं कि केवल 2.5 प्रतिशत पढ़ते हैं। गौर करने की बात है कि 97.5 प्रतिशत बच्चों का शैक्षिक भविष्य क्या होगा। वह अपने दीन की तालीम कब और कहां हासिल करेंगे और किस तरह अपने ईमान को बचाएंगे। याद रखिए सिर्फ़ मदरसों की माली मदद कर देना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि उनको आबाद करना भी ज़रूरी है।

मुसलमानों का एक तबक़ा ऐसा भी है जो मदरसों को बेवक्त की रागिनी और तरक़ी की राह का रोड़ा समझता है। उसका मानना है कि मदरसों में साइंस और टेक्नालाजी की तालीम देनी चाहिए। सवाल यह पैदा होता है कि मदरसा अपना काम छोड़कर साइंस और टेक्नालाजी देने लगेंगे तो दीन की तालीम क्या स्कूलों और कालिजों में होगी। उन्हें किसने रोका है कि मेयारी अस्री दर्सगाहें काएम न करें। वह शौक़ से कालिज में पढ़—पढ़ाएं और मदरसों के हाल पर रहम करें। मदरसे जो काम कर रहे हैं उनको करने दें, उनके आड़े न आएं।

यह टूटे—फूटे मदरसे न होते तो मुल्क में मौजूद लाखों मस्जिदों को इमाम न मिलते। कोई दीनी मसले हल करने वाला भी न होता। नमाज़े जनाज़ा के बिना मुसलमान दफ़नाए जाते। हराम और हलाल की तमीज़ उठ जाती। इस्लाम से वाबस्तगी बस नाम बराबर और रस्मों की हद तक बाकी रह जाती।

उलमाए हक़ ही थे जिन्होंने 1857 से पहले भी ईसाईयत का मुकाबला किया और पादरियों को दंदाने शिकन जवाब दिया और उसके बाद भी उनका ताक़कुब किया। उन्होंने अंग्रेज़ों से बाक़ायदा मैदाने जंग में मुकाबला किया लेकिन जब नाकाम हो गए तो हिकमते अमली बदल दी, और जगह—जगह मदरसे काएम करने शुरू कर दिए। यह मदरसे जंगे आज़ादी की छावनी भी थे और शिर्क व इल्हाद के ख़िलाफ़ मुन्ज़िम महाज़ भी। इन्हीं मदारिस ने कुरआन व सुन्नत की तालीम देकर कुफ़ व शिर्क की तेज़ आंधियों में ईमान की शमा को बुझने नहीं दिया। वरना रूस की मुस्लिम रियासतों जैसा हाल होता। अज़ान पर पाबन्दी लगा दी जाती। कुरआन की तिलावत मना कर दी जाती। मस्जिदों को महक़मा

आसारे कदीमा के हवाले कर दिया जाता। उलमाए हक जिन्होंने मुल्क की तक़सीम की मुख्यालिफ़त की थी, हामियान तक़सीम के नज़दीक क़ाबिले ताज़ीब थे। मुख्यालिफ़ीन ने उन्हें सताने और ईज़ा पहुंचाने में कोई कसर उठा न रखी थी और उन्हें बिला झिझक काफ़िर समझते थे लेकिन वही काफ़िर मौत के डर से अंधे कुवें में गिरने जा रहे हैं। गुमकरदा राहे मुसलमानों को पकड़—पकड़ कर रोक रहे थे और कह रहे थे कि कहां जा रहे हो, क्या वहां का खुदा कोई और है? रुको, ठहरो, अपने वतन में जम जाओ। दूसरी तरफ वही काफ़िर मुआविद व मकाबिर और मासर की हिफ़ाज़त भी कर रहे थे और उनके ईमान को बचाने की फ़िक्र भी कर रहे थे और मदारिस की शक्ल में दीन के किले तैयार कर रहे थे। आज उन्हीं किलों की दीवारों में दरारें डाली जा रही हैं। इनको मज़बूत करो, इनकी मज़बूती का एक ही तरीका है कि अपने जिगर गोशों को उनके अन्दर कुछ दिनों के लिए डाल दो, फिर देखो कि वह किस क़द्र तुम्हारे काम आते हैं। दीनी मदरसों की तारीख का मुताला करो तो तुम्हें मालूम होगा कि यह दीन व मिल्लत की बक़ा और ईमान की सलामती के लिए कितने मुफ़ीद व कारगर हैं। बक़ौल हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी: “रूसी मुसलमानों को इस्लाम की तरफ वापस लाने में माज़ी के दीनी मदारिस ने अहम रोल अदा किया था। वहां के मुसलमानों ने दीनी तालीम के मदारिस व मराकिज़ के क़्याम पर पूरी तवज्जे सर्फ़ की थी।”

वतने अज़ीज़ में मदारिस के साथ चंद साल पहले जो नारवां सुलूक किया गया था उसको अपने मक़सद के लिए मुआन्दीन ने मुफ़ीद नहीं पाया इसलिए दाह व दहिश्त का सिलसिला शुरू हो गया। इसके ख़ातिर ख़्वाह नताएज बरामद हुए और मुसलमान उनके बिछाए हुए जाल में फ़सते चले गए। अगर वह अपनी ख़ैर चाहते हैं तो ख़ालिस दीन की तालीम देने और अल्लाह की रज़ा हासिल करने की नियत से मदरसे क़ाएम करें। मदरसों को इन्डस्ट्री न बनाए। फ़ाक़ा करना पड़े तब भी हक़ की राह न छोड़ें। मुसलमान ही तो पैसे को हाथ का मैल कहते हैं फिर क्यों मैल की तरफ उनका मीलान है। हमारे वतनी भाई इसकी पूजा करते हैं, हम तो नहीं करते हैं फिर क्यों रिश्तों की गर्म बाज़ारी और लेन-देन जारी हैं?

हम अपनी कालमों में पहले भी बता चुके हैं और आज भी फिर याद दिलाते हैं कि तुर्की को इस्लाम की तरफ लौटाने में तुर्की के दरसानों (दीनी दर्सगाहों) ने अहम पार्ट अदा किया था। तो ऐ मुसलमानो! दीन को मज़बूती से थाम लो और इस ज़माने में उसका सबसे आसान तरीका यह है कि दीनी मदरसों का हाथ मज़बूत करो और सबसे पहले उन्हीं में अपनी औलाद को दीन सीखने और कुरआन मजीद पढ़ने के लिए भेजो और अगर तुमने कोताही की तो याद रखो तुम्हारा हर्ष स्पेन के मुसलमानों जैसा होकर रहेगा, जिन्होंने अपने आठ सौ साला दौरे इक्वितदार में बुलन्द व बाला इमारतें और मुज़स्समें खड़े किए, मग़रिब को साइंस, सिनअत और तिब की तालीम दी, बिलाशुब्हा मसाजिद भी बनाई लेकिन दीन की ख़िदमत जैसी करनी चाहिए थी वैसी नहीं की और जिर्बालिटर के हीरो तारिक बिन ज़ियाद के किरदार को भुला बैठे। 1492 ईसवी में स्पेन से मुसलमानों के इक्वितदार के ख़ात्मे के बाद बहुत से मुसलमान अपना ईमान बचाकर अफ़्रीका के मुल्कों की तरफ हिजरत कर गए और जो न जा सके वह ईमान खो बैठे और उनकी नस्लें ईमान से फिर गईं। तुम अपनी और अपनी आने वाली नस्लों के ईमान की हिफ़ाज़त के लिए दीन के किलों यानि मदरसों से लिपट जाओ, उनकी हिफ़ाज़त करो, तुम्हारी हिफ़ाज़त अज़ खुद हो जाएगी। वतने अज़ीज़ को मुसलमानों के हक़ में स्पेन बनाने की कोशिश हो रही है।

हम देख रहे हैं कि मुसलमान हक़ाएक से आंखे चुराकर बाबर बऐश कोश की आलम दोबारा नेस्त के फ़ार्मूले पर अमल कर रहे हैं। किसी किस्म का रिस्क लेने को तैयार नहीं हैं। शादी की तक़रीब को शाही तक़रीब बना रहा है। सादगी से उसको परहेज़ है। फिज़ूल ख़र्ची पसंद है। वक़्ती खुशी हासिल करने के लिए कर्ज़ लेने से भी नहीं हिचकता। मुस्तक़बिल ताबनाक हो, आकबत बखैर हो, उसकी तरफ मुतलक तवज्जे नहीं देता। खुदा करे हमारी तंद व तल्ख बातें उसके दिल के तारों को छेड़ सकें और वह बेचैन होकर उठ खड़ा हो और कुछ कर गुज़रे। बिला शुब्हा राहें पुर ख़्वार, पुर ख़तर हैं लेकिन अज़मे सफ़र के सामने सब हैच हैं।

जूकात् की अहमियत् व पृज्ञीलत्

मुफ्ती मुहम्मद सलमान साहब

इस्लाम की इमारत जिन सुतूनों पर कायम है उनमें से एक अजीम व अहम सुतून ज़कात है। जो इस्लामी फ़राएज़ में से और इस्लाम की बुनियादी तालीमात में से है। और यह इस्लाम ही की देन है कि उसने ज़कात की शक्ल में एक ऐसा हमदर्दी व गमखारी और मसावात व बराबरी का निज़ाम पेश फ़रमाया कि जिसकी नज़ीर मज़ाहिबे आलम में नहीं मिलती। माल जो अल्लाह की एक अजीम नेमत है। उसका सही इस्तेमाल और मुन्सिफ़ाना तक़सीम का ज़कात में बेमिसाल पैगाम दिया गया। कुरआने करीम में सत्तर से ज्यादा मकामात पर नमाज़ के साथ ज़कात को बयान किया गया। ज़कात को अदा करने से बेशुमार फ़वाएद व बरकात हासिल होते हैं और ईमान वालों की अख़लाकी व रुहानी तरबियत भी होती है। दुनियावी एतबार से भी और उख़रवी लिहाज़ से भी। बन्दा—ए—मोमिन को उसके असरात व समरात मिलते हैं।

कुरआन करीम में जिस ताकीद के साथ नमाज़ कायम करने का हुक्म दिया गया है उसी ताकीद के साथ ज़कात अदा करने की अहमियत को बयान किया गया है। कुरआने करीम में जहां कहीं भी इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह का हुक्म दिया गया है वहां पूरे एहतिमाम के साथ यह बात कही गयी है कि जो कुछ हमने तुमको दिया है उसमें से ख़र्च करो यानि बन्दे को उसकी तलकीन की गयी कि यह माल व मताअ और दौलत व सरवत जो इन्सान के पास मौजूद है वह दरअस्ल अल्लाहत आला की अता करदा नेमत है। इस माल को जब बन्दा हुक्मे खुदावन्दी के मुताबिक़ ख़र्च करता है और माल के जो हुकूक़ आयद होते हैं उसको अदा करता है तो उसकी वजह से बाकी माल

की ततबीर हो जाती है। ज़कात इस्लाम के फ़राएज़ और अरकान में से एक है। कुरआन व हदीस में जाबजा उसको अदा करने का हुक्म दिया गया है और उसकी अदायगी में माल व दौलत की ख़ैर व बरकत को पोशीदा बताया है।

ज़कात की अहमियत को कुरआन व हदीस में बहुत जगह ज़िक्र किया और अदायगीये ज़कात में कोताही और लापरवाही करने वालों के बारे में सख्त वईदें भी बयान की गयी हैं। चुनान्चे हज़रत अबहुरैरा रज़ि० से मरवी है कि नबी करीम स०अ० ने फ़रमाया कि जो कोई भी सोने और चांदी का मालिक हो और उसका हक़ अदा न करे तो क्यामत के दिन उसके लिये आग के पतरे तैयार किये जायेंगे, जिन्हें जहन्नम की आग में तपाकर उसके पहलू पेशानी और पीठ को दागा जायेगा और जब एक पतरा तपाया जायेगा तो उसकी जगह दोबारा लाया जायेगा, ऐसे दिन में जिसकी मिक़दार पचास हज़ार साल होगी यहां तक कि बन्दों के दरमियान फ़ैसले की कार्यवाही पूरी हो, फिर उसे मालूम होगा कि उसका ठिकाना जन्नत है या जहन्नम। (मुस्लिम)

ज़कात देने से माल घटता नहीं बल्कि बढ़ता है:

ज़कात न अदा करने का एक बड़ा बल्कि मूल कारण यह माना जाता है कि इससे माल की एक बड़ी मात्रा हाथ से निकल जायेगी और उसके बदले में कोई चीज़ नहीं मिलेगी। लेकिन कुरआन मजीद में इस ख्याल की काट की गयी है और इस पर पूरी तरह से संतुष्ट किया गया है कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से माल घटता नहीं है, बल्कि इसमें बढ़ोत्तरी होती है। अल्लाह तआला का इशारा है:

“अल्लाह तआला सूद को घटाता है और सदक़ात

(दान) को बढ़ाता है।" (बक़रा: 276)

ज़कात के उम्मी फ़ायदे:

ज़कात को खर्च करने के बारे में कुरआन मजीद की ऊपर वर्णित आयत में स्पष्ट रूप से बताया गया है। इसके संबंध में बात यह है कि ज़कात सिर्फ़ उन्हीं लोगों को दी जा सकती है जो फ़कीर या ग़रीब हों। यानि जिनके पास या तो माल ही न हो या अगर हो तो निसाब तक न पहुंचता हो। यहां तक कि अगर उनके अधिकार में ज़रूरत से ज्यादा ऐसा सामान मौजूद है जो साढ़े बावन तोला चांदी की कीमत तक पहुंच जाता है तो वो ज़कात के मुस्तहिक नहीं है। ज़कात का मुस्तहिक वो है जिसके पास साढ़े बावन तोला चांदी की मिल्कियत की रकम या उतनी मालियत का कोई सामान ज़रूरत से ज्यादा न हो। इसमें भी शरीअत का हुक्म ये है कि ज़रूरत मन्द को मालिक बना दिया जाये और वो जिस तरह चाहे उसे खर्च करे।

ज़कात अदा न करने पर वर्द्ध:

साहब—ए—निसाब होने के बावजूद ज़कात न अदा करने वालों को कुरआन पाक में जो सख्त तरीन वर्द्ध सुनाई गयी है उससे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। अल्लाह तआला का इरशाद है: "जो लोग अपने पास सोना—चांदी जमा करते हैं और उसको अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते तो (ऐ नबी स0अ0) आप उनको दर्दनाक अज़ाब की खुश ख़बरी सुना दीजिये, ये दर्दनाक अज़ाब उस दिन होगा जिस दिन उस सोने और चांदी को जहन्नम की आग में तपाया जायेगा, फिर उसके ज़रिये उनकी पेशानी, उनके पहलू और उनकी पीठ को दागा जायेगा (और उनसे कहा जायेगा) ये है वो ख़ज़ाना जो तुमने अपने लिये जमा किया था, तो आज तुम उस ख़ज़ाने का मज़ा चखो जो तुम अपने लिये जमा कर रहे थे।"

लिहाज़ा हर साहबे निसाब मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि वो पूरा—पूरा हिसाब करके ज़कात की अदायगी करे। बहुत से लोग बिना हिसाब के ही कुछ रकम या दूसरी चीजें ग़रीबों को देकर अपने को ज़िम्मेदारी से बरी समझते हैं, ये तरीक़ा सही नहीं है, पूरा हिसाब लगाकर ज़कात देना ज़रूरी है।

ज़कात न देने के दुनियावी नुक़सान:

ज़कात अल्लाह तआला का वह हसीन निज़ाम है जिससे ज़कात देने वाले और लेने वाले दोनों के सुकून की बक़ा है, वरना पिछली कौमें चाहे वह किसी आसमानी मज़हब से वाबस्ता हों या न हों, उनके हालात से पता चलता है कि उन्होंने फुक़रा व मसाकीन का हक़ दबा लिया और उनको ख़ैरात व सदक़ात देने के बजाए उसे अपने पेट के कब्रिस्तान में दफ़न कर लिया और उनके मालों से अपनी तिजोरियां भरीं, नतीजा यह हुआ कि लोग आपस में हसद व बुग़ज़ और कीनाजैसी बीमारियों में पड़कर तकासुरे माल की हवस में एक दूसरे से नबरदआज़मा हुए और दुनिया से हर्फ़े ग़लत की तरह ऐसे मिटे कि आज रुए ज़मीन पर उनका नाम जानने वाला भी कोई नहीं है। इसलिए ज़रूरी है कि हम इस फ़रीज़े को बहसन व ख़ूबी अंजाम दें ताकि दुनिया व आखिरत की कामयाबी से सरफ़राज़ हों।

शेष : आइना-ए-नबवी

..... इसी तरह जो आप (स0अ0) को तकलीफ़ पहुंचाता उसके भी हाल—चाल पूछते थे। लेकिन इस वक्त अक्सर मुसलमानों का यह हाल है कि उन्होंने यह सुन्नत बिल्कुल छोड़ी हुई है। बल्कि ज़िन्दगी में पेश आने वाले इन तमाम मवाक़े पर सुन्नते नबवी (स0अ0) से कोई रिश्ता नहीं समझा है जबकि आप (स0अ0) ने ज़िन्दगी के हर गोशे में मुकम्मल रहनुमाई फ़रमायी है। इसलिए अहले सुन्नत के ज़मरा में शुमार होने वाले तमाम अफ़राद की यह अव्वलीन ज़िम्मेदारी है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) की सुन्नतों को न छोड़े। आपकी सुन्नतों को हम अपने हाथों में मज़बूती से थाम लें और आप (स0अ0) का मुबारक इरशाद है कि जो फ़साद के मौक़े पर मेरी सुन्नत को थामेगा उसके लिये 100 शहीदों का अज़ है। यह कोई मामूली बात नहीं है। मौजूदा हालात में इसपर बहुत गौर की ज़रूरत है। इसलिए कि रसूल (स0अ0) की सुन्नतों को पामाल करना आज मुसलमानों का शेवा बन गया है। हम लाइल्मी और बैतवज्जिही के नतीजे में बहुत से ऐसे काम कर जाते हैं जिसका सुन्नत से कोई वास्ता नहीं है।

एतिकाफ़ की अहमियत व पूजीलता

मुफ्ती अब्दुर्र्हीम कासमी

एतिकाफ़ अगर खालिस अल्लाह को खुश करने के लिए किया जाए तो बहुत ऊंची और अजीमुश्शान इबादत है। रसूलल्लाह (स0अ0) ने एतिकाफ़ के खास फ़ाइदे बयान किये हैं। आप (स0अ0) ने फ़रमाया कि एतिकाफ़ की हालत में एतिकाफ़ करने वाला गुनाहों से तो दूर रहता ही है और मस्जिद से बाहर न निकलने की वजह से जिन नेकियों से वंचित रहता है वो नेकियां भी अल्लाह तआला के करम से उसकी नेकियों में शामिल हो जाती हैं।

एतिकाफ़ करने वाले के बारे में रसूलल्लाह (स0अ0) का इशाद है: “एतिकाफ़ करने वाला गुनाहों से बचता रहता है। और उसके लिए (बिना किए भी) उतनी ही नेकियां लिखी जाती हैं जितनी करने वाले के लिए लिखी जाती हैं।”

फ़ायदा: रसूलल्लाह (स0अ0) ने जिस पाबन्दी से एतिकाफ़ फ़रमाया उम्मुलमोमिनीन हज़रत आयशा (रज़ि)0 कहती हैं कि आप (स0अ0) वफ़ात तक बराबर रमज़ानुल मुबारक के आखिरी दस दिनों में एतिकाफ़ फ़रमाते रहे। फिर आप (स0अ0) के बाद आप की बीवियों ने भी एतिकाफ़ फ़रमाया। दस दिन का एतिकाफ़ आप (स0अ0) का नियम था। एक साल एतिकाफ़ न कर सके तो दूसरे साल बीस दिन का एतिकाफ़ फ़रमाया।

एक दूसरी रिवायत में रसूलल्लाह (स0अ0) का यह इशाद नक़ल किया गया है कि जो शख्स अल्लाह तआला की रज़ा की तलाश में एक दिन एतिकाफ़ करता है तो अल्लाह तआला उसके और जहन्नम के दरमियान तीन ऐसी बड़ी ख़न्दके हाएल कर देता है जो पूरी दुनिया से बड़ी होती है।

एतिकाफ़ : एतिकाफ़ अरबी भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ ठहरने और स्वंय को रोक लेने का है। शरीअत के अनुसार मस्जिद के अन्दर नियत के साथ अपने आप को कुछ विशेष चीज़ों से रोके रखने का नाम एतिकाफ़ है। रसूलल्लाह (स0अ0) ने एतिकाफ़ के विशेष लाभ बताए हैं।

एतिकाफ़ के प्रकार : फुकहा (धार्मिक विद्वान) ने आदेश

और महत्व के आधार पर एतिकाफ़ की तीन किस्में बयान की हैं। 1— वजिब 2— मसनून 3— मुसतहब

वजिब एतिकाफ़ : किसी नज़र और मन्त्र मांगने की वजह से दूसरी इबादतों की तरह एतिकाफ़ भी वजिब हो जाता है। एतिकाफ़ कम से कम एक दिन का होगा उससे कम का नहीं और उसकी नज़र के समय रोज़ा रखने की नियत हो या न की हो, बहरहाल रोज़ा रखना आवश्यक होगा।

मसनून एतिकाफ़ : रमज़ानुल मुबारक के आखिरी दस दिनों में एतिकाफ़ सुन्नते मुअक्कदा अलल किफाया है यानि अगर किसी एक व्यक्ति ने एतिकाफ़ कर लिया तो सभी से सुन्नत को छोड़ने का गुनाह ख़त्म हो जाएगा और अगर किसी ने नहीं किया तो सभी सुन्नत को छोड़ने के गुनहगार होंगे। एतिकाफ़ मसनून के लिए रोज़ा ज़रूरी है।

एतिकाफ़ का तरीका ये है कि बीस रमज़ानुल मुबारक को अस्त के बाद सूरज ढूबने से पहले एतिकाफ़ की नियत से मस्जिद में दाखिल हो जाए और उन्तीस रमज़ानुल मुबारक को ईद का चांद होने के बाद या तीस तारीख़ को सूरज ढूबने के बाद वापस आ जाए।

नफ़िल एतिकाफ़ : नफ़िल एतिकाफ़ में न रोज़ा की शर्त है न मस्जिद में रात गुज़ारने की और न दिनों की कोई संख्या है जितने दिन और जितने क्षणों का चाहे एतिकाफ़ कर सकता है उसका तरीका ये है कि मस्जिद में दाखिल होते समय एतिकाफ़ की नियत कर ले। इस प्रकार जब तक वो मस्जिद में रहेगा एतिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा और जब बाहर आ जाएगा तो एतिकाफ़ ख़त्म हो जाएगा।

एतिकाफ़ करने वालों को पेश आने वाली मुश्किलों : एतिकाफ़ सही होने के लिए एतिकाफ़ करने वाले का मुसलमान और बालिग होना, नियत का होना, मर्द का नापाकी व औरत का माहवारी से पाक होना और ऐसी मस्जिद में एतिकाफ़ करना जिसमें पांच वक्त की नमाज़ अदा की जाती हो शर्त है। बालिग होना ज़रूरी नहीं बालिग होने के निकट और समझदार नाबालिग भी एतिकाफ़ कर सकते हैं। वजिब और मसनून एतिकाफ़ के लिए रोज़ा रखना भी ज़रूरी है।

मसला : एतिकाफ़ उन इबादतों में से है जिसकी अदाएगी मस्जिद में होनी चाहिए, कहीं और बैठ जाना काफ़ी नहीं इसलिए कि यही रसूलल्लाह (स0अ0) का नियम रहा है और हज़0 अली (रज़ि)0 से रिवायत है कि आप (स0अ0) ने फ़रमाया कि एतिकाफ़ केवल मस्जिद में

ही होता है। एतिकाफ़ के लिए मर्दों के हक़ में सबसे बेहतर मस्जिदे हराम फिर मस्जिदे नबवी फिर मस्जिदे अक़सा और फिर शहर की जामा मस्जिद जहां नमाज़ी अधिक आते हों और फिर अपने मोहल्ले की मस्जिद।

औरतों के लिए एतिकाफ़ करना सुन्नत है लेकिन ये ज़रूरी है कि शौहर से इजाज़त ले ले। औरत के लिए मस्जिद में एतिकाफ़ करना मकरूह है। उनको घर में एतिकाफ़ करना चाहिए। अगर घर में पहले से कोई जगह एतिकाफ़ के लिए तय है तो वहाँ एतिकाफ़ करे ये इमाम अबू हनीफ़ा (रह0) की राय है क्योंकि इस दौर में औरतों का मस्जिद में एतिकाफ़ करना फितने से ख़ाली नहीं इसलिए रसूलल्लाह (स0अ0) ने औरतों के मस्जिद में नमाज़ अदा करने के मुकाबले में घर में नमाज़ अदा करने को बेहतर करार दिया है।

एतिकाफ़ करने वाले को चाहिए कि अपना समय कुरआन पाक की तिलावत, रसूलल्लाह (स0अ0) की सीरत (चरित्र), अम्बिया व बुजुर्गों के वाक्यों व हालातों और दीनी किताबों का अध्ययन और उन्हीं चीज़ों को पढ़ाना, दीनी किताबों को लिखना या उनको एकत्रित करने इत्यादि में अपना समय लगाए। एतिकाफ़ की हालत में खुशबू वगैरह लगा सकते हैं। एतिकाफ़ के आदाब में ये भी है कि मस्जिद के आदाब का लिहाज़ रखा जाए। मस्जिद में सामान लाकर ख़रीदा बेचा न जाए हां अगर सौदा बाहर हो तो इस तरह के मामले की गुंजाइश है। इबादत समझ कर बिल्कुल ख़ामोश रहना या बेहूदा और नामुनासिब बातें करना भी मकरूह है।

बीवी से हमबिस्तरी, मस्जिद के अन्दर हो या बाहर, जानबूझ कर हो या भूल से, दिन में हो या रात में, वीर्य निकले या न निकले, हर हाल में एतिकाफ़ टूट जाएगा। हमबिस्तरी से पहले के मामले यानि छूना या चूमना इत्यादि भी जाएज़ नहीं मगर उससे एतिकाफ़ नहीं टूटेगा बल्कि बीवी से बातचीत करना सही है। इसी प्रकार ऐसी बेहोशी जो एक दिन से अधिक हो गयी हो तो एतिकाफ़ टूट जाता है औरत को मासिक धर्म आ गया तो उससे भी एतिकाफ़ टूट जाएगा और उसकी क़ज़ा वाजिब होगी। दिन में जानबूझ कर खा पी लेने से रोज़ा ख़राब हो जाता है और एतिकाफ़ भी टूट जाता है।

बिना आवश्यकता मस्जिद से बाहर निकल जाने से भी एतिकाफ़ टूट जाता है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह0) के

नज़दीक तो बिना आवश्यकता थोड़ी देर के लिए निकलने से भी एतिकाफ़ ख़राब हो जाता है। लेकिन साहिबैन (रह0) के निकट दिन रात के अधिकतर भाग में मस्जिद से बाहर रहने से एतिकाफ़ ख़राब हो जाता है। अल्बत्ता किसी ज़रूरत के लिए बाहर निकला जा सकता है। ये आवश्यकता दो प्रकार की है। स्वाभाविक, शरई। स्वाभाविक आवश्यकता से मुराद पेशाब पाखाना गुस्ल वाजिब हो जाने की सूरत में गुस्ल के लिए निकलना, खाना लाने वाले न हों तो खाने के लिए निकलना इत्यादि शामिल है मगर इन सूरतों में भी आवश्यकता से अधिक नहीं ठहरना चाहिए इन्हीं शरई कामों में उलमा ने हुक्म को शुमार किया है कि मस्जिद से बाहर जाकर हुक्म का पीकर बदबू मिटाकर मस्जिद में आ जाना चाहिए। यही तरीका उन लोगों को भी अपनाना चाहिए जो सिगरेट पान वगैरह के आदी हों। शरई आवश्यकताओं में से ये भी है कि अगर ऐसी मस्जिद में एतिकाफ़ कर रहा है जहां जुमा नहीं होता है तो जुमा के लिए जामा मस्जिद जाना सही है। बल्कि इसकी रिआयत जरूरी है कि केवल इतनी देर दूसरी मस्जिद में ठहरे कि तहीयतुल मस्जिद पढ़ ले, सुन्नत अदा कर ले फिर खुत्बे से जुमा के बाद की सुन्नतें अदा करने के बाद जल्द से जल्द अपनी मस्जिद में आ जाए देरी मकरूह है। अगर कोई शख्स जबरन निकाल दे या मस्जिद टूट जाए जिसकी वजह से निकलना पड़े या उस मस्जिद में जान व माल का ख़तरा हो जाए तो उन सभी हालतों में उस मस्जिद के बजाए दूसरी मस्जिद में जाकर एतिकाफ़ कर लेना सही है और उससे एतिकाफ़ में कोई ख़लल नहीं पड़ेगा लेकिन दूसरी मस्जिद में फौरन बिना देर किये चला जाए इसी प्रकार अगर एतिकाफ़ के बीच मस्जिद से निकल कर अज़ान देने के लिए मीनार पर चढ़ जाए तो इसकी भी इजाज़त है।

अगर एतिकाफ़ वाजिब था और किसी वजह टूट गया तो उसकी क़ज़ा ज़रूरी है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह0) के नज़दीक मसनून एतिकाफ़ में केवल उस दिन की क़ज़ा करनी होगी जिस दिन का एतिकाफ़ टूट गया जबकि इमाम अबू यूसुफ़ (रह0) के निकट पूरे दस दिन की क़ज़ा वाजिब होगी। मशहूर फ़कीह अल्लामा हाफिज़ इब्ने हुमाम (रह0) का रुझान भी इसी तरफ मालूम होता है इसलिए यही अधिक अच्छा तरीका है कि पूरे अश्वा की क़ज़ा की जाए।

शैजुँ के जिस्मानी बृ ऊठानी फूर्याढ़े

हकीम काज़ी ख़ालिद, (एम. ए.)

अल्लाह तआला ने तीन तरह की मख़्लूक पैदा की हैं। नूरी यानि फरिश्ते, नारी यानि जिन्न और ख़ाकी यानि इन्सान जिसे अशरफुल मख़्लूकात का दर्जा दिया गया। दर अस्ल इन्सान रुह और जिस्म के मजमूए का नाम है और उसकी तख़्लीक इस तरह मुमकिन हुई कि जिस्म मिट्टी से बनाया गया और इसमें रुह आसमान से लाकर डाली गयी। जिस्म की ज़रूरतों का सामान या एहतिमाम ज़मीन से किया गया कि तमाम तर अनाज, ग़्लूला, फल और फूल ज़मीन से उगाए जबकि रुह की गिज़ा का एहतिमाम आसमानों से होता रहा। हम साल के ग्यारह माह अपनी ज़िस्मानी ज़रूरतों को इस कायनात में पैदा होने वाली चीज़ों से करते रहते हैं और अपने जिस्म को तन्दरुस्त व तवाना रखते हैं। मगर रुह की गिज़ाई ज़रूरत को पूरा करने की ग्रज़ से हमें पूरे साल में एक महीना ही मयस्सर आता है जो रमजानुल मुबारक है।

दुनिया के एक अरब से ज्यादा मुसलमान कुरआन के हुक्मों की रोशनी में बिना किसी जिस्मानी व दुनयावी फ़ायदे का तमाम किये तामीलन रोज़ा रखते हैं। ताहम रुहानी तस्कीन के साथ-साथ रोज़ा रखने से जिस्मानी सेहत पर भी मुसबत असरात मुरत्तब होते हैं, जिसे दुनिया भर के तिब्बी माहिरीन ख़ासकर डॉक्टर माइकल, डॉक्टर जोज़फ़, डॉक्टर सैम्यूअल इलेक्ज़ेन्डर, डॉक्टर ब्राम जे, डॉक्टर ऐमरसन, डॉक्टर ख़ान यम्ट, डॉक्टर एडवर्ड निकल्सन और जदीद साइंस ने हज़ारों क्लीनिकल ट्रायल्ज़ से तस्लीम किया है। कुछ अर्से पहले तक यही ख़्याल किया जाता था कि रोज़े के तिब्बी फ़ायदे निज़ामे हज़म तक ही महदूद हैं लेकिन जैसे-जैसे साइंस और इल्मे तिब ने तरक़ी की, दीगर बदने इन्सानी पर उसके फ़ायदे आशकार होते

चले गये और मुहकिक़ इस बात पर मुत्तफ़िक़ हुए कि रोज़ा तो एक तिब्बी मोज़ज़ा है।

आइये! अब जदीद तिब्बी तहकीकात की रोशनी में देखें कि रोज़ा इन्सानी जिस्म पर किस तरह अपने मुफीद असरात मुरत्तब करता है।

टोज़ा और निज़ामे हज़म: हाज़मे का निज़ाम जैसा कि हम सब जानते हैं कि एक-दूसरे से क़रीबी तौर पर मिले हुए बहुत से अज़ा पर मुश्तमिल होता है। अहम आज़ा जैसे मुंह और जबड़े में लुआबी गुदूद, ज़बान, गला, मुक़वी नाली (Limentary Canal) यानि गले से मेदे तक खुराक ले जाने वाली नाली। मेदा, बारह अंगुश्ती आंत, जिगर और लबलबा और आंतों से मुख्तलिफ़ हिस्से वग़ैरह तमाम आज़ा इस निज़ाम का हिस्सा हैं। जैसे ही हम कुछ खाना शुरू करते हैं या खाने का इरादा ही करते हैं यह निज़ाम हरकत में आ जाता है और हर उज़ू अपना मख़्सूस काम शुरू कर देता है।

ज़ाहिर है कि मौजूदा लाइफ़स्टाइल से यह सारा निज़ाम चौबिस घंटे ड्यूटी पर होने के अलावा ऐसाबी दबाव जंक फूड और तरह-तरह के मुजिरे सेहत अलम-ग़्लम खानों की वजह से मुतास्सिर हो जाता है। रोज़ा इस सारे निज़ामे हज़म पर एक माह का आराम तारी कर देता है। उसका हैरानकुन असर बतौर ख़ास जिगर पर होता है क्योंकि जिगर में निज़ामे हज़म में हिस्सा लेने के अलावा पन्द्रह मज़ीद अमल भी सर अंजाम देने होते हैं। रोज़े के ज़रिये जिगर को चार से छः घंटे तक आराम मिल जाता है। यह रोज़े के बिना क़तई नामुमकिन है क्योंकि बेहद मामूली खुराक यहां तक कि एक ग्राम के दसवें हिस्से के बराबर भी, अगर मेदे में दाखिल हो जाता है तो पूरा का पूरा निज़ामे हज़म अपना काम शुरू कर देता है और जिगर फौरन

मसरूफे अमल हो जाता है। जिगर के इन्तिहाई मुश्किल कामों में एक काम इस तवाजुन को बरकरार रखना भी है जो गैर हज़म शुदा खुराक और तहलील शुदा खुराक के दरमियान होता है। उसे या तो हर लुक्मे को स्टोर में रखना होता है या फिर ख़ून के ज़रिये उसके हज़म होकर तहलील हो जाने के अमल की निगरानी करनी होती है जबकि रोज़े के ज़रिये जिगर तवानाई बख्शा खाने के स्टोर करने के अमल में ग्लोबलिन जो जिस्म के महफूज रखने वाले मुदाफ़अती निज़ाम को तक़्वियत देता है, की पैदावार पर सर्फ़ करता है।

रमज़ानुल मुबारक में मोटापे के शिकार अफ़राद का नारमल सहरी और इफ़तारी करने की सूरत में आठ से दस पाउन्ड वज़न कम हो सकता है, जबकि रोज़ा रखने से इज़ाफ़ी चर्बी भी ख़त्म हो जाती है। वह ख़्वातीन जो औलाद की नेमत से महरूम हैं और मोटापे का शिकार हैं वह ज़रूर रोज़ा रखे ताकि उनका वज़न कम हो सके। याद रहे कि जदीद मेडिकल साइंस के मुताबिक़ वज़न कम होने से बेऔलाद औरतों को औलाद होने के इम्कानात कई गुना बढ़ जाते हैं। रोज़े से मेदे की रुतूबतों में तवाजुन आता है। निज़ामे हज़म की रुतूबतों को ख़ारिज करने का अमल दिमाग़ के साथ वाबस्ता है। आम हालात में भूख के दौरान यह रुतूबतें ज्यादा मिक़दार में ख़ारिज होती हैं जिससे मेदे में तेज़ाबियत बढ़ जाती है, जबकि रोज़े की हालत में दिमाग़ से रुतूबत ख़ारिज करने का पैग़ाम नहीं भेजा जाता क्योंकि दिमाग़ के ख़लियों में यह बात मौजूद होती है कि रोज़े के दौरान खाना—पीना मना है। यूं निज़ामे हज़म ठीक काम करता है। रोज़ा निज़ामे हज़म के सबसे हस्सास हिस्से गले और गिज़ाई नाली को तक़्वियत देता है इसके असर से मेदे से निकलने वाली रुतूबतें बेहतर तौर पर मुतवाज़िन हो जाती हैं जिससे तेज़ाबियत (Acidity) जमा नहीं होती उसकी पैदावार रुक जाती है। मेदे के रियाही दर्दों में काफ़ी इफ़ाका होता है। क़ब्ज़ की शिकायतें रफ़अ हो जाती हैं और फिर शाम को रोज़ा खोलने के बाद मेदा ज्यादा

कामयाबी से हज़म का काम अंजाम देता है। रोज़ा आंतों को भी आराम और तवानाई फ़राहम करता है। यह सेहतमंद रुतूबत के बनने और मेदे के पुट्ठों की हरकत से होता है। आंतों के शराईन के गिलाफ़ के नीचे महफूज रखने वाले गिलाफ़ के नीचे महफूज रखने वाले निज़ाम का बुनियादी उन्सर मौजूद होता है। जैसे अंतड़ियों का जाल, रोज़े के दौरान उनको नई तवानाई और ताज़गी हासिल होती है। इस तरह हम इन तमाम बीमारियों के हमलों से महफूज हो जाते हैं जो हज़म करने वाली नालियों पर हो सकते हैं।

रोज़ा और दौराने ख़ून: रोज़े के जिस्म पर जो मुसबत असरात मुरत्तब होते हैं उनमें सबसे ज्यादा काबिले ज़िक्र ख़ून के रोगनी माद्दों में होने वाली तब्दीलियां हैं, खुसूसन दिल के लिये मुफ़ीद चिकना, एच डी एल, की सतह में तब्दीलियां बड़ी अहमियत की हामिल हैं क्योंकि उससे दिल की शिरियानों को तहफ़ुज हासिल होता है, इसी तरह दो मज़ीद चिकनाइयों, एच डी एल, और ट्राई ग्लेस्ट्राइड की सतहें भी मामूल पर आ जाती हैं, इससे यह साबित हो सकता है कि रमज़ानुल मुबारक हमें गिज़ाई बेएतदालियों पर काबू पाने का बेहतरीन मौक़ा फ़राहम करता है और उसमें रोज़ों की वजह से चिकनाइयों के इस्तहाले (मेटाबोलिज़म) की शरह बहुत बेहतर हो जाती है। याद रहे कि दौराने रमज़ान चिकनाई वाली अशिया का कसरत से इस्तेमाल इन फ़ायदों को मफ़्कूद कर सकता है।

दिन में रोज़े के दौरान ख़ून की मिक़दार में कमी आ जाती है। यह असर दिल को इन्तिहाई फ़ायदेमन्द आराम फ़राहम करता है। सबसे अहम बात यह है कि रोज़े के दौरान बढ़ता हुआ ख़ून का दबाव हमेशा कम सतह पर होता है। शिरियानों की कमज़ोरी और फ़रसूदगी की अहमतरीन वुजूहात में से एक वजह ख़ून में बाकी मान्दा माद्दे (Remnans) का पूरी तरह तहलील न हो सकना है जबकि दूसरी तरफ़ रोज़ा बतौर ख़ास इफ़तार के वक्त के नज़दीक ख़ून में मौजूदा गिज़ाइयत के तमाम ज़रूर तहलील हो चुके होते हैं। इस तरह ख़ून की शिरियानियों की दीवारों पर चर्बी या

दीगर अजजा जम नहीं पाते जिसके नतीजे में शिरयाने सिकुड़ने से महफूज रहती हैं चुनान्वा मौजूदा दौर की इन्तिहाई ख़तरनाक बीमारी शिरयानों की दीवारों की सख्ती (Arteriosclerosis) से बचने की बेहतरीन तदबीर रोज़ा ही है। रोज़े के दौरान जब खून में गिज़ाई माददे कम तरीन सतह पर होते हैं तो हड्डियों का गिरोह हरकत पज़ीर हो जाता है और खून की पैदाइश में इज़ाफ़ा हो जाता है। इसके नतीजे में कमज़ोर लोग रोज़ा रखकर आसानी से अपने अन्दर ज़्यादा खून की कमी दूर कर सकते हैं।

रोज़ा और निज़ामे ऐसाब: रोज़े के दौरान बाज़ लोगों को गुस्से और चिड़चिड़ेपन का शिकार देखा गया है, मगर इस बात को यहां पर अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि इन बातों का रोज़ा और ऐसाब से कोई ताल्लुक़ नहीं होता। इस किस्म की सूरतेहाल अनानियत (Egotistic) या तबियत की सख्ती की वजह से होती है। दौराने रोज़ा हमारे जिस्म का ऐसाबी निज़ाम बहुत पुर सुकून और आराम की हालत में होता है और इबादत की बजा आवारी से हासिलशुदा तस्कीन हमारे तमाम कुदूरतों और गुस्से को दूर कर देती है इस सिलसिले में ज़्यादा खुशअ व खुज़ूआ और अल्लाह की मर्जी के सामने सरनिगों होने की वजह से तो हमारी परेशानियां भी तहलील होकर खत्म हो जाती हैं। रोज़े के दौरान चूंकि हमारी जिन्सी ख्वाहिशात अलाहदा हो जाती हैं चुनान्वे उसकी वजह से भी हमारे ऐसाबी निज़ाम पर किसी किस्म के मनफ़ी असरात मुरत्तब नहीं होते।

रोज़ा और वुज़ू के मुश्तरका असर से जो मज़बूत हम आहंगी पैदा होती है। उससे दिमाग़ के दौराने खून में बेमिसाल हम आहंगी पैदा होती है जाकि सेहतमंद ऐसाबी की निशानदेही करता है। इसके अलावा इन्सानी तजतुश्शऊर जो रमज़ान के दौरान इबाइदात की मेहरबानियों की बदौलत साफ़ शफाफ़ और तस्कीन पज़ीर हो जाता है ऐसानी निज़ाम से हर किस्म के तनाव और उलझन को दूर करने मदद करता है।

रोज़ा और इब्नानी ख़लियात: रोज़े का सबसे अहम असर ख़लियों के दरमियान और ख़लियों के अन्दर सियाल

माददों के दरमियान तवाजुन को कायम पज़ीर रखना है। चूंकि रोज़े के दौरान मख्तलिफ़ सियाल मिक़दार में कम हो जाते हैं। ख़लियों के अमल में बड़ी हद तक सुकून पैदा हो जाता है। इसी तरह लुआब दार ज़िल्ली की बालाई सतह से मुतालिक़ ख़लिये जिन्हें (Epithelial) सेल कहते हैं और जो जिस्म की रुतूबत के मुतवातिर इख़राज के ज़िम्मेदार होते हैं उनको भी सिर्फ़ रोज़े के ज़रिये बड़ी हद तक आराम और सुकून मिलता है जिसकी वजह उनकी सेहतमंदी में इज़ाफ़ा होता है। ख़लियातियात के इल्म के नुक्तेनज़र यह कहा जा सकता है कि लुआब बनाने वाले गुदूद गर्दन के गुदूद तैमूसिया और लबलबा (pancreas) के गुदूद में शदीद बैचैनी से माहे रमज़ान का इन्तिज़ार करते हैं ताकि रोज़े की बरकत से कुछ सुस्ताने का मौक़ा हासिल कर सकें और मज़ीद काम करने के लिये अपनी तवानाइयों को जिला दे सकें।

रोज़ा और गैंद मुल्लिमों के इन्किषाफ़ात: इस्लाम ने रोज़े को मोमिन के लिये शिफ़ा क़रार दिया है और जब साइंस ने इस पर तहकीक़ की तो साइंसी तरक्की चौंक उठी और क़रार किया कि इस्लाम एक कामिल मज़हब है।

आक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी के मशहूर प्रोफ़ेसर मोर पाल्डा अपना किस्सा इसी तरह बयान करते हैं कि मैंने इस्लामी उलूम का मुताला किया और जब रोज़े के बाब पर पहुंचा तो चौंक पड़ा कि इस्लाम ने अपने मानने वालों को इतना अजीम फार्मूला दिया है कि अगर इस्लाम अपने मानने वालों को कुछ और न देता सिर्फ़ रोज़े का ही फार्मूला दे देता तो फिर भी उससे बढ़कर उनके पास कोई और नेमत न होती। मैंने सोचा कि उसको आज़माना चाहिये, फिर मैंने रोज़े मुसलमानों के तर्ज़ पर रखना शुरू किये। मैं अर्से दराज़ से वरमे मेदा (Stomach Inflammation) में मुब्लिला था। कुछ दिनों बाद ही मैंने महसूस किया कि उसमें कमी वाक़े हो गयी है, मैंने रोज़ों की मशक़ जारी रखी, कुछ अर्से बाद ही मैंने अपने जिस्म को नार्मल पाया और एक माह बाद अपने अन्दर इन्किलाबी तब्दीली महसूस की।

पोप एल्फ़ गाल्फ़ हालैन्ड के सबसे बड़े पादरी गुज़रे

हैं। रोज़ों के मुतालिक अपने तर्जुबात कुछ इस तरह बयान करते हैं कि मैं अपने रुहानी पैरोकारों को हर माह तीन रोजे रखने की तलकीन करता हूं मैंने इस तरीकेकार के ज़रिये जिस्मानी और वज़नी हमआहंगी महसूस की। मेरे मरीज़ मुसलसल मुझ पर ज़ोर देते हैं कि मैं उन्हें कुछ और तरीका बताऊं लेकिन मैंने यह उसूल बना लिया है कि उनमें वो मरीज़ जो लाइलाज हैं उनको तीन नहीं बल्कि एक महीने तक रोजे रखवाये जायें। मैंने शुगर, दिल की बीमारियां और मेदे के मरीज़ों को मुस्तकिल एक महीने तक रोजे रखवाये। शुगर के मरीज़ों की हालत बेहतर हुई, उनकी शुगर कन्ट्रोल हो गयी। दिल के मरीज़ों की बेचैनी और सांस का फूलना कम हो गया, सबसे ज्यादा फायदा पेट के मरीज़ों को हुआ।

फार्माकोलाजी के माहिर डॉक्टर लूथर जीम ने रोजेदार शख्स के मेदे की रुतूबत ली और फिर उसका लेबोरेट्री टेस्ट करवाया इसमें उनहोंने महसूस किया कि वह गिज़ाई मुतअफ़न अज़ज़ा (Food Septic Particles) जिससे मेदा तेज़ी से बीमारियां कुबूल करता है बिल्कुल ख़त्म हो जाते हैं। डॉक्टर लूथर का कहना है कि रोज़ा जिस्म और ख़ासकर पेट की बीमारी में सहत की ज़मानत है।

मशहूर माहिरे नफ़सियात सेगमेन्ड फ्राइड फ़ाक़ा और रोज़े का कायल था। उसका कहना था कि रोज़े से दिमाग़ी और नफ़सियाती बीमारियों का पूरी तरह से खात्मा हो जाता है और रोजेदार आदमी का जिस्म मुसलसल बैरुनी दबाव को कुबूल करने की सलाहियत पा लेता है, रोजेदार को जिस्मानी खिंचाव और ज़हनी तवान से सामना नहीं पड़ता।

जर्मनी, अमरीका इंग्लैंड के माहिर डॉक्टरों की एक टीम ने रमज़ानुल मुबारक में तमाम मुस्लिम देशों का दौरा किया और यह नतीजा निकला कि रमज़ानुल मुबारक में चूंकि मुसलमान नमाज़ ज्यादा पढ़ते हैं जिससे पहले वह वुजू करते हैं। उससे नाक, कान, गले की बीमारियां बहुत कम हो जाती हैं, खाना कम खाते हैं जिससे पेट व लिवर की बीमारियां कम हो जाती हैं, चूंकि मुसलमान दिनभर भूखा रहता है, इसलिए वह

ऐसाबी और दिल की बीमारियों में भी कम पड़ता है।

ग्रज़ यह कि रोज़ा इन्सानी सेहत के लिये इन्तिहाई फ़ायदेमंद है। रोज़ा शुगर लेवल, कोलेस्ट्राल और ब्लड प्रेशर में एतदाल लाता है। स्ट्रेस व ऐसाबी और ज़हनी तनाव ख़त्म करके बेश्तर नफ़सियाती बीमारियों से छुटकारा दिलाता है। रोज़ा रखने से जिस्म में खून बनने का अमल तेज़ हो जाता है और जिस्म की ततहीर हो जाती है। रोज़ा इन्सानी जिस्म के फुज़लात और तेज़ाबी माद्दों का इख़्ताज़ करता है रोज़ा रखने से दिमाग़ी ख़लियात भी फ़ाज़िल माद्दों से नजात पाते हैं। जिससे न सिर्फ़ नफ़सियात व रुहानी बीमारियों का ख़ात्मा होता है बल्कि उससे दिमाग़ी सलाहियतों को जिलामिलकर इन्सानी सलाहियतें भी उजागर होती हैं। रोज़ा मोटापा और पेट को कम करने में भी मुफ़ीद है। ख़ा सतौर पर निज़ामे हज़ाम को बेहतर करता है इसके अलावा मज़ीद बीसियों बीमारियों का भी इलाज है।

रोज़ा और एहतियाती तदाबीर: याद रखना चाहिये कि मुन्दरजा बाला फ़वाएद तभी मुमकिन हो सकते हैं, जब हर सहर व इफ़तार में सादा गिजा का इस्तेमाल करें। ख़ासकरके इफ़तारी के वक्त ज्यादा सक्रील और मुरग्गन तली हुई अशिया मसनल समोसे, पकौड़े, कचौरी वगैरह का इस्तेमाल कसरत से किया जाता है, जिससे रोज़े का रुहानी मक्सद तो फैत होता ही है खुराक की इस बेएतदाली से जिस्मानी तौर पर होने वाले फायदे भी मफ़कूद हो जाते हैं बल्कि मेदा मज़ीद ख़राब हो जाता है, लिहाज़ा इफ़तारी में दस्तरख्वान पर दुनिया—जहान की नेमतें इकट्ठी करने के बजाय, इफ़तार किसी फल, खजूर या शहद मिले दूध से कर लिया जाये और फिर नमाज़ की अदायगी के बाद मज़ीद कुछ खा लिया जाये। इस तरह दिन में तीन बार खाने का सिलसिला भी कायम रहेगा और मेदे पर बोझ नहीं पड़ेगा। इफ़तारी में पानी, दूध या कोई भी मशरूब एक ही बार में ज्यादा इस्तेमाल करने के बजाय रुक—रुक कर इस्तेमाल करें। इंशाअल्लाह एहतियाती तदाबीर पर अमलदरामद से यक़ीनन हम रोज़े के जिस्मानी व रुहानी फ़ायदे हासिल कर सकेंगे।

रोज़े की कुछ अनिवार्यताएं एवं ग्रस्तौ सहयोग का नियत

रोजे चाहे रमज़ान का हो चाहे किसी और चीज़ का। बहरहाल उनके लिये सहरी खाना सुन्नत है। रोज़े की शुरूआत सुबह—ए—सादिक (प्रातः काल का समय) के उदय होने से होती है और ये सूरज ढूबने पर ख़त्म होता है। इसलिये शरीअत ने यह सहूलत दे रखी है कि रोज़ेदार सुबह होने से पहले सहरी खा ले ताकि रोज़े में ताक़त बहाल रहे। अलग—अलग हदीसों में आप (स0अ0) ने इसका शौक़ दिलाया है। इसीलिये सहरी में सवाब होने पर उम्मत एकमत है। सहरी उतनी देर तक खायी जा सकती है कि सुबह होने की शंका न हो, रात के बचे होने का भी शक न हो। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि0 से रिवायत है कि हम लोग जब रसूलुल्लाह (स0अ0) के साथ सहरी करते थे तो सहरी और फ़ज़्र की अज़ान के बीच पचास आयत की तिलावत के बराबर का अन्तर होता था। आम तौर इतना कुरआन पांच—छः मिनट में पढ़ा जाता है।

अगर इस ख्याल से सहरी खाई कि अभी सुबह नहीं हुई है हालांकि सुबह हो चुकी थी तो रोज़े की क़ज़ा वाजिब (अनिवार्य) होगी, कफ़्फ़ारा वाजिब (अनिवार्य) नहीं होगा, अगर शक हो कि शायद फ़ज़्र का वक्त हो गया तो बेहतर है कि खाना—पीना छोड़ दे फिर भी अगर खा ले और सुबह होने का यक़ीन न हो तो उसका रोज़ा हो जायेगा।

इसीलिये आप (स0अ0) का इरशाद है: “सहरी खाओ सहरी में बरकत है।” (बुखारी 1923)

एक दूसरी हदीस में आप (स0अ0) ने फ़रमाया: “हमारे और अहले किताब (यहूदी, इसाई इत्यादि) के रोज़ों में अन्तर और श्रेष्ठता सहरी खाने की है (हम खाते हैं और वो नहीं खाते हैं)।” (मुस्लिम 2550)

रही नियत तो इसके बगैर रोज़ा नहीं होगा। इसीलिये अगर एक व्यक्ति सुबह से शाम तक उन सभी चीज़ों से परहेज़ करे जिनसे रोज़ादार परहेज़ करता है लेकिन उसकी नियत रोज़ा रखने की न हो तो उसका रोज़ा नहीं होगा। इसीलिये आप (स0अ0) का इरशाद है: “जो फ़ज़्र से पहले ही नियत न करे उसका रोज़ा नहीं होगा।” (तिरमिज़ी 730)

कई दूसरी हदीसों को देखते हुए फुक़हा (धार्मिक विद्वान) ने फ़रमाया कि ज़वाल (अर्थात् सूर्य का सर के ठीक ऊपर होना) से एक घन्टा पहले नियत कर ले किन्तु शर्त यह है कि कुछ खाया—पिया न हो तो रमज़ान का और नफ़िली रोज़ा रखना दुरुस्त होगा और नियत का केन्द्र क्योंकि दिल होता है इसलिये सिर्फ़ दिल में ये इरादा कर लेना काफ़ी है कि कौन सा रोज़ा रख रहा हूं ज़बान से कहना ज़रूरी नहीं यद्यपि बेहतर यही है कि ज़बान से भी कह दे। (हिन्दिया 1 / 195)

जिन चीज़ों से रोज़ा नहीं टूटता

भूल कर खाने—पीने, सर में तेल लगाने और नहाने—धोने से रोज़ा नहीं टूटता है। अगर दिन में सो जाये और एहतलाम (वीर्य स्खलित होना) हो जाये तो रोज़ा नहीं टूटता है। इसी तरह दिन में इन्जेक्शन लगवाने से रोज़ा नहीं टूटता है लेकिन बेहतर यही है कि अगर बहुत सख़्त ज़रूरत न हो तो इफ़्तार के बाद इन्जेक्शन लगवाये। मिस्वाक चाहे ताज़ी या हरी हो या खुशक और सूखी हो उससे रोज़ा नहीं टूटता है यद्यपि मन्ज़न इत्यादि करना मकरूह है और अगर मन्ज़न हलक के नीचे उत्तर जाये तो रोज़ा टूट जायेगा। अगर ज़बान से कोई चीज़ चखकर थूक दे तो रोज़ा नहीं टूटता, यद्यपि अनावश्यक ऐसा करना मकरूह है।

रमज़ान के महीने में अगर किसी का रोज़ा किसी वजह से टूट जाए तब भी उस पर अनिवार्य है कि रामज़ान के सम्मान में रोज़ेदार की तरह खाने—पीने से परहेज़ करे।

क़ज़ा व कफ़्फ़ारा वाजिब होने की सूर्यों

रोज़े को तोड़ने वाली चीज़ें दो तरह की हैं। कई वो हैं जिनसे क़ज़ा और कफ़्फ़ारा दोनों लाज़िम होते हैं, और वो चीज़ें ये हैं:

पति—पत्नी का संबंध स्थापित करना, चाहे स्खलित (वीर्य निकलना) हो या न हो दोनों हालतों में रोज़ा टूट जायेगा और कफ़्फ़ारा ज़रूरी होगा। अगर ये काम औरत की रज़ामन्दी से हुआ तो उस पर भी कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा और अगर उसकी रज़ामन्दी नहीं थी, पति ने ये काम ज़बरदस्ती से किया तो औरत पर केवल क़ज़ा ज़रूरी होगी, अगर शुरूआत में इसे मजबूर किय गया हो और बाद में उसकी रज़ामन्दी हो गयी हो तब भी उस पर केवल क़ज़ा ज़रूरी होगी।

जानबूझ कर ऐसी चीज़ खाना जिसको खाने के तौर पर और दवा इस्तेमाल किया जाता है, जैसे रोटी, चावल, शरबत वगैरह या किसी दवा का इस्तेमाल करना।

इसके उल्टे अगर भूले से यह कर दे तो रोज़ा नहीं टूटेगा और कोई ऐसी चीज़ खाये जिसे खाने या दवा के तौर पर नहीं खाया जाता तो रोज़ा टूट जाएगा लेकिन सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम होगी कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं होगा, जैसे कोई कंकड़ी या लोहे का टुकड़ा खा ले।

इन चीज़ों से कफ़्फ़ारा वाजिब होने का ज़िक्र इशारे के साथ या खुले तौर पर हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) की इस हदीस में आया है। कहते हैं कि हम सब आप (स०अ०) के पास बैठे हुए थे कि एक बदू खिदमत में हाजिर हुआ और कहने लगा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं तबाह हो गया। आप (स०अ०) ने पूछा, क्या हुआ? उसने कहा कि मैंने रोज़े की हालत में पत्नी से संबंध स्थापित कर लिया। आप (स०अ०) ने पूछा, क्या आज़ाद करने के लिये तुम्हारे पास गुलाम हैं?

उसने कहा, नहीं; आप (स०अ०) ने फ़रमाया, तो क्या दो महीने लगातार रोज़ा रखते हो? उसने कहा, नहीं; आप (स०अ०) ने फ़रमाया इतना माल है कि साठ ग्रीबों को खिला सकते हो? उसने कहा, नहीं। (बुखारी 1936—मुस्लिम 2595)

इससे पता चला कि संबंध स्थापित कर लेने से क़ज़ा व कफ़्फ़ारा दोनों ज़रूरी होंगे और इस बात की ओर इशारा भी मिला कि चूंकि खाना—पीना भी इसी दर्जे (श्रेणी) में है अतः इसका भी यही आदेश होगा। साथ ही कफ़्फ़ारे का तरीका भी मालूम हुआ कि पहले नम्बर पर गुलाम आज़ाद करना है, न कर सके जैसा कि वर्तमान समय में गुलामी का दौर खत्म हो जाने के कारण किसी के लिये भी ये शक्ल सम्भव नहीं, तो दो महीने लगातार रोज़े रखे, अगर इन दो महीनों के बीच रमज़ान आ गया तो या अय्याम तश्रीक आ गये तो क्रम टूट जायेगा और शुरूआत से रोज़े रखने पड़ेंगे। यही हुक्म उस वक्त भी होगा जब बीमार हो जाये या औरत निफ़ास (प्रस्व रक्त) की हालत में हो जाये, क्रम उससे भी टूट जायेगा। यद्यपि अगर बीच में औरत को हैज़ (माहवारी) आ जाये तो वो रोज़े रखना बन्द कर दे, फिर जब हैज़ रुक जाये तो जितने रोज़े बाकी रह गये थे सिर्फ़ वही रख ले फिर से रखने की ज़रूरत नहीं है।

अगर किसी को खाने पर जान व माल की धमकी देकर मजबूर किया गया, और उसने खौफ़ (भय) से खा लिया तो रोज़ा टूट जायेगा लेकिन सिर्फ़ क़ज़ा ज़रूरी होगी। यही हुक्म उस समय होगा जब ग़लती से कुछ खा—पी ले, यानि रोज़ा याद था, खाने—पीने का इरादा नहीं था लेकिन खाने—पीने की चीज़ हलक़ से उतर गयी, तो ऐसी सूरत में रोज़ा टूट जायेगा और सिर्फ़ क़ज़ा वाजिब होगी।

अगर कोई ऐसी चीज़ खाई या पी जिसको बतौर दवा या ग़िज़ा नहीं खाया—पिया जाता है जैसे कन्करी वगैरह।

दांतों में कोई चीज़ अटकी हुई थी, अगर वो चने के बराबर या उससे बड़ी थी तो उसके निगलने से रोज़ा

टूट जायेगा और क़ज़ा होगी और अगर चने से छोटी थी तो रोज़ा नहीं टूटेगा लेकिन ये उस वक्त होगा जब मुंह से न निकाला हो अगर निकाल कर खाये तो चीज़ छोटी हो या बड़ी रोज़ा टूट जायेगा ।

अगर हक्ना (पचना) लगाया या नाक के अन्दरूनी हिस्से में दवा डाली या कान में तेल या कोई दवा डाली या औरत ने अपनी शर्मगाह में दवा डाली तो रोज़ा टूट जायेगा और केवल क़ज़ा ज़रूरी होगी लेकिन अगर आंख में दवा डाली या सुरमा लगाया तो रोज़ा नहीं टूटेगा, इसी तरह अगर कान में पानी डाला तब भी रोज़ा नहीं टूटेगा ।

अगर अगरबत्ती या लोबान सुलगाई फिर उसको सूंधा और धुआं अन्दर चला गया तो रोज़ा टूट जायेगा । इसी तरह सिगरेट, बीड़ी इत्यादि से रोज़ा टूट जायेगा ।

कै (उल्टी) के बारे में लोगों में आम तौर से ये ग़लत फ़हमी पायी जाती है कि चाहे जिस तरह की भी कै हो रोज़ा टूट जायेगा, इसलिये कै के सिलसिले में आप स0अ0 ने इशाद फ़रमाया:

जिसको रोज़े की हालत में खुद से कै हो जाये उस पर क़ज़ा नहीं है और जो जानबूझ कर कै करे उस क़ज़ा ज़रूरी है । (तिरमिज़ी)

इस हदीस के आधार पर फुक्हा (धार्मिक विद्वानों) ने फ़रमाया: कै कि कई सूरतें हो सकती हैं लेकिन रोज़ा केवल दो सूरतों में टूटता है, एक ये कि मुंह भर के हो और रोज़ेदार इसको निगल ले, चाहे पूरी कै या चने के बराबर या उससे ज़्यादा को निगले । दूसरे ये कि जानबूझ कर कै करे और मुंह भर के कै हो, बक़िया किसी और तरह की कै से रोज़ा नहीं टूटता है ।

पान, तम्बाकू और सिगरेट-बीड़ी का हुक्म

इसी हुक्म में पान तम्बाकू और सिगरेट इत्यादि भी हैं । पान तम्बाकू की पीक अगर कोई निगल लेता है तो बिल्कुल साफ़ बात है कि उसने एक चीज़ हलक़ से नीचे उतार ली । अतः इससे रोज़े के चले जाने में कोई शक की बात ही नहीं है लेकिन कुछ लोग पीक

निगलते नहीं हैं सिर्फ़ पान व तम्बाकू चबाकर उसे थूक देते हैं । इसलिये कुछ लोगों को शक होता है कि उससे शायद रोज़ा नहीं टूटता क्योंकि फुक्हा किराम ने फ़रमाया है कि किसी चीज़ के चबाने से रोज़ा नहीं टूटता और इस शब्द में सिर्फ़ चीज़ को चबाया गया खाया नहीं गया लेकिन ये शक ठीक नहीं है इसलिये कि खाने-पीने को रोज़ा तोड़ने वाला बताया गया है और उन चीजों के चबाने को भी खाना कहते हैं फिर कुछ पान या उसका पीक तो बहरहाल हलक़ के नीचे उतर जाता है साथ ही इसके आदी लोगों को इसमें खास लज्जत (विशेष मज़ा) मिलती है अतः न केवल यह कि उनसे रोज़ा टूट जायेगा । बल्कि अगर उन चीजों को जानबूझ कर इस्तेमाल किया गया तो कफ़ारा भी लाज़िम होगा ।

इसी हुक्म में गुल से दांत मांजना भी है । इसलिये कि इसमें भी खास लज्जत मिलती है और कुछ हिस्सा के अन्दर जाने का बहुत हद तक संभावना रहती है ।

जहां तक बीड़ी-सिगरेट इत्यादि का संबंध है तो उसमें जानबूझ कर धुआं अन्दर लिया जाता है और जानबूझ कर धुआं अन्दर लेने से रोज़ा टूट जाता है । अतः इन सारी चीजों से परहेज़ ज़रूरी है ।

मज्जन और टूथपेस्ट का हुक्म

आप (स0अ0) ने मिस्वाक की बड़ी ताकीद फ़रमायी (ज़ोर दिया) है । इस एतबार से फुक्हा ने रमज़ान में भी मिस्वाक करने की इजाज़त दी है चाहे मिस्वाक की लकड़ी सूखी हो या गीली लेकिन अगर मिस्वाक की तरी उसकी हलक़ के नीचे उतर जाये तो रोज़ा टूट जाता है लिहाज़ा रोज़े की हालत में मिस्वाक करते हुए इसका ख्याल रखना चाहिये कि मिस्वाक की तरी या लकड़ी का कोई हिस्सा हलक़ से नीचे न उतरने पाये ।

जहां तक मन्जन व टूथपेस्ट इत्यादि का संबंध है तो उनका हुक्म मिस्वाक के हुक्म से अलग है इसलिये कि इनमें ज़ायका बहुत बढ़ा हुआ होता है । अतः जिस तरह फुक्हा (धर्मज्ञाताओं) ने फ़रमाया कि किसी

ज़रूरत के बगैर किसी चीज़ का चबाना मकरुह है। उसी तरह इन सब चीजों का भी हुक्म होगा। यद्यपि किसी खास ग्रज़ से अगर उन चीजों से दांत साफ़ करे तो इन्शाअल्लाह कराहत नहीं होगी।

आक्सीजन का हुक्म

दमे के मरीज़ को दौरा पड़ने के वक्त आक्सीजन दी जाती है। रोज़े की हालत में इस तरह आक्सीजन लेने का क्या हुक्म होगा? फ़िक्रही जुज़ को सामने रखा जाये तो ख्याल होता है कि अगर होता है कि अगर आक्सीजन के साथ कोई दवा न हो तो रोज़ा नहीं टूटना चाहिये क्योंकि ये सांस लेना है और सांस लेने के ज़रिये हवा लेने से रोज़ा नहीं टूटता है और न उसे खाने-पीने में गिना जाता है। अगर इसके साथ दवा के कण भी हों तो फिर उससे रोज़ा टूट जायेगा।
(जदीद फ़िक्रही मसले : 188 / 1)

जहां तक दमे के मरीज़ के लिये इन्हेलर के प्रयोग का संबंध है तो चूंकि इसमें दवा मिली हुई होती है लिहाज़ा इससे रोज़ा टूट जायेगा।

इंजेक्शन और ड्रिप लगवाना

उलमा की सहमति इसी पर है कि इंजेक्शन चाहे किसी भी प्रकार का हो उससे रोज़ा नहीं टूटेगा चाहे रग में लगाया जाये या गोश्त में। यही हुक्म ड्रिप लगवाने का भी है, लेकिन बगैर किसी ग्रज़ के बेहतर यही है कि दिन में न लगवाये, ज़रूरत हो तो दिन में भी लगवा सकता है, लेकिन सिर्फ़ इस मक़सद से ड्रिप लगवाना कि बदन में ताक़त आ जाये और प्यास में कमी हो जाये मकरुह है।

ज़बान के नीचे दवा रखना

फुक्हा ने अनावश्यक किसी चीज़ को मुंह में रखने और चखने को मकरुह घोषित दिया है, यद्यपि यह स्पष्ट किया गया है कि अगर किसी कारण से ऐसा करे तो कराहत नहीं होगी। कारण की मिसाल में फुक्हा ने लिखा है कि शौहर अगर बदअखलाक (दुर्व्यवहरी) और सख्त मिज़ाज वाला हो तो उसकी बीवी के लिये नमक इत्यादि का पता लगाने के लिये चखना जायज़

होगा। लेकिन साथ ही ये साफ़ है कि अगर कोई ऐसी चीज़ मुंह में रखी या चबाई जिसका हलक़ के नीचे उतर जाना विश्वसनीय है तो रोज़ा टूट जायेगा। इसकी मिसाल में फुक्हा ने कुछ गोंदों का नाम लिया है। शायद इसी वजह से हमारे उलमा ने पान तम्बाकू इत्यादि के मुंह में रखने को रोज़ा तोड़ने वाला बताया है। इसलिये कि इसका असर साफ़ तौर पर हलक़ के नीचे पहुंच जाते हैं और तम्बाकू की तलब पूरी हो जाती है।

इस व्याख्या के बाद हम आसानी से फैसला कर सकते हैं कि “इन्जाइना” (दिल का रोग) के मरीजों के लिये इस ज़रूरत से कहीं बढ़कर है जिसके तहत बीवी को नमक चखने की छूट दी गयी है और सवाल केवल ये रह जाता है कि ये दवा हलक़ के नीचे तो नहीं उतरती? अगर एहतियात के बावजूद दवा के ज़र्रात खास गोंद की तरह हलक़ के नीचे उतर जाते हों तो उसके मुंह में रखने से रोज़ा टूट जायेगा और ज़बान के नीचे रखने के बाद तबियत बेहतर हो जाने से लगता है ज़ाहिरी तौर पर यही बात है। लेकिन विशेषज्ञों की राय है कि ऐसा नहीं है, इसको देखते हुए कहा जा सकता है कि जहां तक हो सके रोज़ेदार इस गोली का इस्तेमाल न करे लेकिन इसके इस्तेमाल से रोज़ा उसी वक्त टूटेगा जब दवा मिला हुआ लुआब (एक प्रकार का थूक) हलक़ के नीचे उतर जाये। सिर्फ़ ज़बान के नीचे गोली रखना रोज़ा टूटने की वजह नहीं होगी।

इंहेलर का इस्तेमाल

जिन लोगों को दमे की शिकायत होती है उनको इन्हेलर के ज़रिये दवा का इस्तेमाल करना पड़ता है। इसके ज़रिये पाउडर का बहुत छोटा कण फेफड़ों तक पहुंचाया जाता है। इलाज के इस तरीके के ज़रिये दवा के इस्तेमाल से रोज़ा टूट जायेगा। इसलिये फ़िक़ के नज़रिये से साफ़ ज़ाहिर हो रहा है कि मनाफ़िज़-ए-अस्लिया (मुंह, दिमाग, नाक, कान, अगली-पिछली शर्मगाहों) से जब किसी चीज़ को दाखिल किया जा रहा हो तो केवल दाखिले से रोज़ा

टूट जाता है और इन्हेलर के इस्तेमाल में बहरहाल दखल होता है चाहे दवा कम ही क्यों न हो।

भाप की शक्ल में दवा का इस्तेमाल

निमोनिय और कई दूसरी बीमारियों में भाप के ज़रिये भी दवा इस्तेमाल की जाती है। ये इस्तेमाल कभी दवा को पानी में डालकर और पानी को खौलाकर उसकी भाप मुँह और नाक से लेकर किया जाता है और कभी ये काम कुछ यन्त्रों के द्वारा किया जाता है। बहरहाल भाप चाहे किसी भी यन्त्र की मदद से ली जाये या सादा तरीके से, दोनों हालतों में रोज़ा टूट जायेगा, इसके लिये फुक्हा ने साफ़ किया है कि जानबूझ कर धुआं हलक़ के नीचे उतारने से रोज़ा टूट जाता है और ये बात इसमें पूरी तरह से पायी जाती है।

बवालीय मस्झों पट मरहम लगाने का आदेश

अगर पीछे के रास्ते से किसी दवा का प्रयोग किया जाए और दवा हुक्ना (पिछली शर्मगाह का भीतरी भाग) लगाने के स्थान तक पहुंच जाए तो रोज़ा टूट जाता है। इसलिए फुक्हा ने इसको भी हुक्ना लगाने के स्थान में सम्मिलित किया हैं जबकि फुक्हा ने स्पष्ट किया है कि यदि दवा हुक्ना लगाने के स्थान तक न पहुंचे तो रोज़ा नहीं टूटेगा।

इस व्याख्या से स्पष्ट हो गया है कि कोई दवा या मरहम लगाने से या इसको पानी से तर करके चढ़ाने से रोज़ा नहीं टूटेगा इसलिए कि जानकारों का कहना है कि बवालीयी मस्झे हुक्ना लगाने के स्थान से बहुत नीचे होते हैं।

दोग की पुंि ट के लिए यन्त्रों का प्रयोग

अगर रोग की खोज के लिए पीछे के गुप्तांग में किसी यन्त्र की सहायता ली जाए तो अगर यह यन्त्र सूखे हैं और इनका एक सिरा बाहर है जैसा कि

आमतौर पर होता है तो इन यन्त्रों को अन्दर डालने से रोज़ा नहीं टूटेगा लेकिन अगर यन्त्र पर कोई तेल या ग्रीस जैसी चीज़ लगाकर इसे अन्दर किया गया है तो रोज़ा टूट जाएगा।

यही हुक्म औरत की अगली शर्मगाह तहकीक (खोज) के लिये किसी यन्त्र के डालने का भी है।

गर्भ तक यन्त्र का पहुंचाना

गर्भ की सफाई के लिये और फ़िर रहम () को बढ़ाने के लिये जो यन्त्र (क्पसंजवते) प्रयोग किये जाते हैं और गर्भ का अन्दरूनी हिस्सा खुरचने का यन्त्र (न्तमजजम) यदि उन पर कोई तेल इत्यादि लगाकर उनको प्रविष्ठ कराया जाये तो रोज़ा टूट जाएगा और अगर सूखा डाला जाए तो रोज़ा नहीं टूटेगा।

लेकिन यदि सूखा डालकर और एक बार बाहर निकालकर दोबारा साफ़ किये बिना उनको फिर डाला जाए तो रोज़ा टूट जाएगा चाहे दोबारा सूखा हो गीला।

औरत की शर्मगाह में दवा का रखना

यदि आन्तिरक भाग में कोई दवा रखी जाए या रखी ऊपरी हिस्से में जाए वह अन्दरूनी हिस्से तक पहुंच जाए तो रोज़ा टूट जाएगा, चाहे दवा गीली हो या सूखी।

पेशाब के स्थान तक नली का पहुंचना

यदि मर्द के मुसाना तक नली पहुंचाई जाये तो इससे रोज़ा नहीं टूटेगा चाहे नली सूखी हो या गीली इससे दवा पहुंचाई जाए या नहीं और औरत के मुसाना में नली पहुंचाई जाए तो यदि नली गीली है तो या इससे दवा पहुंचाई गई है तो रोज़ा टूट जाएगा लेकिन अगर नली सूखी हो और इससे दवा भी न पहुंचाई गई हो तो रोज़ा नहीं टूटेगा।

किसी के यहां इफ़्तार करें तो यह दुआ पढ़ें:

“أَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُونَ وَأَكَلَ طَعَامَكُمُ الْأَبْرَارُ

وَصَلَتْ عَلَيْكُمُ الْمَلَائِكَةُ”

बीफ एक्सपोर्ट थे भारत दुनिया का बाजार बना देश बना

सरकार के नुमाइंदों से लेकर कई संगठनों द्वारा बीफ को लेकर तरह-तरह के बयान दिए जाते हैं लेकिन एक रिपोर्ट के मुताबिक आज की तारीख में भारत दुनिया का नंबर एक बीफ निर्यातक है।

रिपोर्ट के मुताबिक भारत ने 2017 में 1.56 मिलियन टन बीफ का निर्यात किया था। अब इस रिपोर्ट के आने के बाद मोदी सरकार पर मुस्लिम समुदाय ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। उनका कहना है कि मोदी सरकार सिर्फ बीफ को लेकर देश का माहौल खराब करना चाहती है।

सर्वे के मुताबिक देश में करीब 71 फीसदी आबादी ऐसे लोगों की है जो खाने में मांस का उपयोग करते हैं। और देश के मुस्लिम आबादी लगभग 18 फीसदी है। अमेरिका के एग्रीकल्वर एक्सपोर्ट डिपार्टमेंट ने अपनी रिपोर्ट में दावा किया कि मोदी सरकार बनने के बाद पिछले साल अक्टूबर में भारत से बीफ एक्सपोर्ट 5: बढ़कर 20 लाख टन हो गया था।

हालांकि चीन जैसे देशों में बीफ की बढ़ती मांग इसकी वजह है। मोदी सरकार में भारत बीफ निर्यात में विश्व में पहले स्थान पर पहुंच गया है। भारत में बीफ का सालाना कारोबार करीब 27 हजार करोड़ रुपये का है।

मुस्लिम समाज के लोगों का कहना है कि इस रिपोर्ट के आने के बाद सरकार का दोहरा नजरिया सामने आया है। अगर कोई मुसलमान गाय को लेकर भी जा रहा होता है तो उसका कत्ल कर दिया जाता है और आरोपियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं होती है वहीं, दूसरी तरफ बीफ एक्सपोर्ट में भारत नम्बर 1 हो जाता है।

उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार की अवैध बूचड़खानों पर कार्रवाई से एक बार फिर गौ मास को लेकर पूरे भारत में सियासत होने लगी है। योगी आदित्यनाथ के इस रवैये से परेशान मीट व्यापारी हड़ताल पर चले गए हैं। लेकिन यूपी के सीएम की इस तरह कि कार्रवाई के बाद भी भारत में बीफ निर्यात व्यापार पर कोई असर नहीं पड़ा।

उल्लेखनिय है कि भारत बीफ निर्यात में विश्व में पहले स्थान पर है। भारत में बीफ का सालाना कारोबार की रकम करीब सालाना 27 हजार करोड़ रुपए है। उल्लेखनिय है कि अमेरिकी कृषि विभाग का कहना है कि बीफ के निर्यात में भारत ब्राजील के साथ संयुक्त रूप से दुनिया में नंबर एक पर है। आंकड़ों के मुताबिक, वित्त वर्ष 2015–16 में भारत की बीफ मार्केट में करीब 20 फीसदी की हिस्सेदारी थी।

वहीं वित्त वर्ष 2014–15 में भारत ने 24 लाख टन बीफ निर्यात किया था। दुनिया में निर्यात होने वाले कुल बीफ में करीब 60 फीसदी हिस्सेदारी भातर, ब्राजील और ऑस्ट्रेलिया की है। 2013–14 में भारत की भागीदारी 20.8 फीसदी की थी। इस लिहाज से बीफ एक्सपोर्ट में भारत ने प्रगति की है।

पिछले दो सालों में भारत ने बासमती चावल से भी ज्यादा बीफ का निर्यात किया है। पिछले 5 सालों में कुल निर्यात रेवेन्यू में बीफ निर्यात से होने वाली आय 0.76 प्रतिशत से बढ़कर 1.56 प्रतिशत हो गई है। उधर कुछ दिनों पहले खबर आई थी कि ब्राजील में हानिकारक बीफ बेचे जाने के कारण यहां बीफ का आयात बंद कर दिया गया है।

अगर ब्राजील में ये बैन लगा रहता है तो भारत सहित कई देशों को फायदा हो सकता है। क्योंकि ब्राजील अब भारत से मांस आयात करने के बारे में सोच रहा है। वहीं मांस की सबसे ज्यादा खपत वाले देश चीन ने भारत से बीफ आयात पर हासी भरी है।

भारत में यूपी है बीफ का सबसे बड़ा केंद्र

अमेरिकी कृषि विभाग के अनुसार भारत में मवेशियों की संख्या करीब 30 करोड़ है। इसमें उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा 28 फीसदी मवेशियों की आबादी है। लिहाजा इसी प्रदेश में बूचड़खानों की संख्या सबसे ज्यादा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 72 लाइसेंसी बूचड़खाने हैं जिसमें उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा 38 हैं।

भारत में 71% लोग मांसाहारी

एक सर्वे के अनुसार पता पड़ा है कि भारत में करीब 71 प्रतिशत आबादी ऐसे लोगों की है जो खाने में मांस का उपयोग करते हैं। भारत में बढ़ते मांसाहार के आकड़ों के कारण ही भारत में मांस की खपत बढ़ी है।

इस्लाम का उदय

एवं इसके मूलभूत कारण

मुहम्मद नफीस खाँ नदवी

इस्लाम जब निर्माणी एवं क्रान्तिकारी विचारों तथा सम्पूर्ण एवं उल्लेखनीय जीवन व्यवस्था के रूप में सामने आया तो उसने कुफ़ व शिर्क, जाहिलियत व जिहालत, क़बाइली अस्बियत और तमाम गैर इन्सानी अफ़कार व आमाल पर ख़ते तन्सीख खींच दी और मुस्बत तौर पर इन्सानों के लिए ईमान व यकीन, हकीकत पसंदी व हक परस्ती, आलमगीर इख्वत व मुसावात और एक सालेह व पाकीजा तहज़ीब का रास्ता हमवार किया। चुनान्चे इस्लामी तालीमात के नतीजे में एक ऐसी बेमिसाल तहज़ीब वजूद में आयी जिसका मकानी रक्बा अक्साए मशिरक से अक्साए मग्निब तक और ज़मानी वक़्फ़ा 1400 साल पर मुहीत है। ज़मान व मकान की वुसअत व आफ़ाक़ियत व इस तहज़ीब के दूररस व देरपा असरात ने आफ़ताब की रोशनी, माहताब की चांदनी और मौसम के बदलाव की तरह पूरी दुनियाए इन्सानियत को मुतास्सिर किया और तक़रीबन तमाम ही इन्सानी तहज़ीबों ने इससे फ़ायदा उठाया।

उरुज की बुलन्दियों तक पहुंचने के बाद यह आलमगीर तहज़ीब अपनी तमामतर खूबियों के होते हुए ज़वाल का शिकार हुई। ज़िन्दगी के हर मैदान में इन्सानियत की मसीहाई के दावों के बावजूद मुल्कों और कौमों ने न सिर्फ़ इसको नज़रअंदाज किया बल्कि इसकी हक़कानियत और अबदियत पर भी सवाल खड़े किए और आज तारीख की सबसे बड़ी हुकूमत न सिर्फ़ अपने वजूद को सहारने में लगी हुई है बल्कि दीगर मुल्की व आलमी तहज़ीबों के साथ कशमकश में भी मुबला है।

आगे की सतरें असबाबे उरुज के अवराक की एक कोशिश है ताकि उम्मते मुस्लिमा मौजूदा सूरतेहाल में उससे रहनुमाई हासिल कर सके।

अरबों की हालतः इस्लाम से पहले अरब एक वहशी और गैर मुतम्दिदन कौम थे। तहज़ीब व तमद्दुन से ना आशना, इल्म व हुनर से बेगाना, अख़लाक व अदब से दूर, तहज़ीब याफ़ता दुनिया से अलग—थलग, निहायत गुमनाम और पस्त ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। मुहज़ज़ब और तरक़ी याफ़ता मुमालिक से इनको तीन तरफ़ से समन्दर और एक तरफ़ से सहरा ने अलग कर रखा था। इसके बरअक्स ईरान व रोम उस वक़्त दुनिया की खुदाई के दावेदार थे। मशिरक व मग्निब की ज़मामे क़यादत उन्हीं के हाथ में थी। उनके हुदूदे मुमलकत अरब को इस तरह घेरे हुए थीं जिस तरह कलाई को कंगन। अरब पर उन्होंने कभी फौजकशी इसलिए नहीं की कि वह कोई ऐसा ज़रखेज़ और दौलतमंद मुल्क नहीं था, नीज़ वहां तक पहुंचने का रास्ता भी पुरपेच व संगलाक था। चुनान्चे उन्होंने अरबों पर अपना सियासी तसल्लुत ही काफ़ी समझा और उनकी निगरानी के लिए जा बजा चौकिया कायम कर दीं।

इराक़, मिस्र और शाम के बाज़ारों में अरबों की रसाई ज़रूर थी लेकिन वह किसी शुमार में न थे। मण्डियों में उनके घोड़ों और खजूरों को अहमियत हासिल थी लेकिन खुद शहरियों की नज़र में वह आम देहातियों से ज़्यादा न थे। कभी किसी मजलिस में उनका तज़किरा होता तो उनकी चर्ब ज़बानी, उनकी फ़साहत व बलाग़त, घोड़ों की उम्दगी वगैरह चन्द बातों का ही ज़िक्र होता जो आम तौर पर गैर मुतम्दिदन कौमों की खासियत समझी जाती थी।

मुतम्दिदन अक्वाम की नज़र में अरबों की हैसियत को मुअर्रिखीन ने बड़ी वज़ाहत से बयान किया है और खुद अरबों ने भी उनका एतराफ़ किया है। चुनान्चे अल्लामा इब्ने कसीर व मशकी ने ईरानी दरबार में शंहशाहे ईरान और मुस्लिम कासिद की बातचीत को नक़ल करते हुए लिखा है: यज्दगर्द ने बातचीत शुरू करते हुए कहा कि जहां तक मुझे मालूम है तुम दुनिया में सबसे ज़्यादा ज़बूं हाल थे। तुम्हारी तादाद बहुत थोड़ी सी थी और आपस की खानाज़ंगी और बाहमी इखिलाफ़ व इफ़ितराक में भी तुम अपनी

नज़ीर आप थे। बव़क्ते ज़रूरत तुम्हारी सरकोबी के लिए हम कुर्ब व जवार के देहातों को हुक्म देते थे और वही तुम्हारे लिए काफ़ी होते थे। हमें कभी तुम्हारे लिए फौज भेजने की ज़रूरत नहीं पड़ी। अगर तुम भूख और फ़ाकाकशी से परेशान होकर आए हो तो हम तुम्हारे लिए राशन मुकर्रर कर दें, ताकि तुम्हारे हालात दुरुस्त हो जाए।

मुसलमानों के सफीर व नुमाइन्दा हज़रत मुगैरा बिन शोएबा ने इसके जवाब में कहा कि ऐ बादशाह आपने जो कुछ हमारे बारे में बयान किया वाक्या यह है कि हमारी कौम की बुराइयों का आपको पूरा इल्म नहीं। वरना हमारी हालत तो उससे भी ज्यादा गिरी हुई थी। दुनिया में कोई भी कौम इतने बुरे हाल में न होगी। हममें फ़र्क व फ़ाक़ा और इफ़्लास इस हद तक पहुंच चुका था कि ज़मीन के कीड़े—मकोड़े और सांप बिछू तक हम खा लेते थे और इन चीज़ों को अपनी गिज़ा समझते थे। अल्लाह की बिछाई हुई ज़मीन ही हमारा पैदाइशी घर था और ऊंट या भेड़—बकरियों की खाल से जो कपड़ा हम बना लेते थे वही हमारा लिबास था। एक का दूसरे को क़त्ल कर डालना हमारा तरीक़ा था। हममें से बाज़ लोग अपनी लड़कियों को इस ख़ौफ़ से कि उन्हें खिलाना—पिलाना पड़ेगा, ज़िन्दा दफ़न कर दिया करते थे। बेशक अब से पहले हमारा यही हाल था, लेकिन अल्लाह तआला ने अपने एक बन्दा को रसूल बनाकर हमारी तरफ़ भेजा। इससे भी बड़ी शहादत यह है कि किसरा के पास जब आंहज़रत स030 का नामाए मुबारक पहुंचा तो उसने बहुत ही तहकीर के साथ उसको फाड़ डाला और कहा कि मेरा गुलाम होकर मुझे इस तरह मुख़ातिब करता है।

फुतूहात का सिलसिला: तारीखी शहादतों से बखूबी मालूम होता है कि शाहाने रोम व फारस अरबों को किस क़द्र हकीर और कम हैसियत समझते थे। लेकिन तारीख इस बात की भी गवाह है कि यही अरब जब सहरा से बाहर निकले तो फ़तेह व नुसरत ने हर जगह उनका इस्तकबाल किया। कामयाबी ने उनके क़दम चूमे। गर्दने उनके सामने झुक गयीं और बड़ी—बड़ी

सरकश ताकतों ने हथियार डाल दिये। अरबों का यह सैलाब इस्लाम के दारुस्सलतनत मदीना मुनब्वरा से निकला और हर उस चीज़ को बहा ले गया जो इसके रास्ते में पड़ गई। देखते ही देखते उसने मैदानों और पहाड़ों को अपनी आगोश में ले लिया। इस सैलाब में हज़ारों साल पुरानी तहज़ीबें भी बह गईं। बड़ी—बड़ी मुनज्ज़म और ताक़तवर सल्तनतें ज़ेर व ज़बर हो गईं। साहबे इक्विटदार व पुर शौक़त कौमें बेनिशा हो गई और तारीख में सिर्फ़ उनका नाम बाक़ी रह गया। यह अरब अपने ज़ज़ीरे से इस तरह निकले थे कि उनके कपड़े ख़स्ता और पेबन्द लगे हुए थे, पैरों में फटे पुराने जूते, तलवारों के न्याम बोसीदा और परतले शिकस्ता थे। बाज़ घोड़ों को ज़ीन भी नसीब न थी। वह तहज़ीब व तमदून से इस क़द्र नाआशना थे कि काफ़ूर को नमक समझ बैठे और आटे में इस्तेमाल भी कर लिया, लेकिन देखते ही देखते यही ख़ानाबदोश दुनिया के हाकिम हो गए और उन कौमों को सरनगूं कर लिया जो तहज़ीब व तमदून और उलूम व फुनून में इमामत के मनसब पर थी। ऊंटों और बकरियों के चरवाहे जहां बानी करने लगे और दुनिया के सबसे ज्यादा तरकी याफ़ता अक़वाम के इमाम व पेशवा हो गए।

ज़ज़ीर—ए—अरब में किसी अरबी सल्तनत का नाम व निशान तक न था। न वहां कोई मुनज्ज़म फौज थी और न उनमें सियासी शऊर था। अरब शायर थे, मस्त मलंग थे, ज़ंगू थे, ताजिर थे, लेकिन सियासत से उन्हें कोई वास्ता न था। उनके दीन में इतनी कूव्वत ही न थी जो उन्हें मुत्तहिद और मुनज्ज़म कर सके। वह ऐसे मुशिरकाना निज़ाम के मातहत ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे जो बेहद कमज़ोर और बेजान था। सिर्फ़ एक सदी की मुद्दत में इन वहशी व बेरहम अरबों ने हैरतअंगेज़ आलमगीर और अज़ीमुश्शान ताक़त पैदा कर ली।

अरबों के ख़स्ताहालात में यह अज़ीमुश्शान इन्किलाब रुस्वाकुन जुअफ़ व ज़िल्लत के बाद यह ज़बरदस्त ताक़त व सरबुलन्दी, यास व नाउम्मीदी के बाद यह जुनून व ताज़गी ख़बाबे ग़फ़लत के बाद यह बेदारी तारीख का एक नादिर और अनोखा वाक्या है।

मुअर्रिखीन का इत्तिफाक है कि तारीखे इन्सानी में इससे ज्यादा अजीब व ग़रीब वाक्या पेश नहीं आया। तारीखे इन्सानी में जिस क़द्र वाक्यात मज़कूर हैं इस्लाम के जुहूर का वाक्या शायद सबसे ज्यादा अजीब है। इस्लाम का जुहूर उस कौम में हुआ जो बिल्कुल गैर मुनज्ज़म और परागन्दा थी। इस मुल्क में जो इन्हितात की आखिरी हद को पहुंच चुका था लेकिन अभी पूरी एक सदी भी न गुज़री थी कि इस्लाम निस्फ़ करअ अर्ज़ी में फैल गया। बुलन्द व ताक़तवर मोमालिक को उसने ज़ेर व ज़बर करके रख दिया। क़दीम तरीन मज़ाहिब को जो सदियों बल्कि हज़ारों साल पेशतर से काएम थे ढा दिया। इन्सानों और कौमों की ज़हनियत बदल दी और एक नए आलम की बुनियाद डाली जो इन्तिहाई मज़बूत और ताक़तवर था। यह आलमे इस्लाम है।

उज्ज के अल्लाबाब: मुसलमानों की फुतूहात में उनके अख़लाके आलिया, ईमानी सिफात और उनकी मुल्की सीरत का बुनियादी रोल रहा है। वह इन औसाफ़ में इस क़द्र मारूफ़ और मुमताज़ थे कि जहां कहीं भी जाते और क़्याम करते, उनके अख़लाके हस्ना और ईमानी औसाफ़ मुकद्दमतुल जैश साबित होते। यह अख़लाक व औसाफ़ मुख़ालिफ़ीन के दिलों को मुसख़्बर कर लेते। किरदार की अज़मत व मुहब्बते इन्सानी नुफूस को फ़तेह कर लेती। तलवारों, नेज़ों और भालों से पहले यह औसाफ़ अपना काम कर जाते। जो लोग उनके अख़लाके हस्ना और हुस्ने अमल का मुशाहदा कर लेते उन्हें यक़ीन हो जाता कि यह आम लोग नहीं हैं। यह दूसरों से मुमताज़ और बहुत ही ऊँची सतह के लोग हैं। ऐसे लोग मग़लूब नहीं हो सकते। अनक़रीब यह दुनिया पर छा जाएंगे। ईमानी सिफ़ता और अख़लाके हस्ना की असर पज़ीरी व असर आफ़रीनी के बाद तज़ज़िया निगारों के नज़दीक तीन बुनियादी असबाब हैं जिनके ज़रिए हुकूमतें और फ़ौजें अपने हरीफ़ों पर फ़तेह व ग़ल्बा पाती हैं:

- 1- तादाद की कसरत
- 2- ज़ंगी साज़ो सामान

3- अस्करी तरबियत

अरब अपनी आबादी और रक्बा के एतबार से बहुत कम थे। नीज़ जो ज़ंगे उनहोंने रोमियों और ईरानियों से लड़ी वह अपने इलाके से बाहर निकलकर लड़ीं। वतने अज़ीज़ से दूर, मरकज़े इस्लाम से जुदा, बिल्कुल मुसाफ़िराना हैसियत, जहां बड़ी दुश्वारी और तवील मुददत के बाद ही कमक पहुंच सकती थी। ऐसे में उनका सामान खुर्द व नोश और हथियारों की मदद वही थी। जिसे वह अपने दुश्मन से छीन सकते थे। इसके बरअक्स अरबों ने जिन मुमालिक पर लश्करकशी की थी वह निहायत ही ज़रखेज़ व शादाब मुल्क थे। फ़ौजों के जत्थे बादलों की तरह उमड़ते चले आते थे और मुल्क के हर हिस्से में उनको आसानी के साथ रसद पहुंचती थी। बिलफ़र्ज़ अगर पूरा जज़ीरतुल अरब भी ईरानियों और रोमियों के मुकाबले के लिए निकल आते जो गरचे अक़लन मुहाल है तब भी इरान व रोम के मुकाबले जो दुनिया की आबादी का आधा हिस्सा थे उनकी कोई हैसियत न होती। हालांकि जो अरब उनसे ज़ंग के लिए निलके थे उनकी मज़मूई तादाद बीस फ़ीसद से भी ज्या दा न थी। तारीख़ी शहादतें मौजूद हैं कि मुसलमान और उनके दुश्मनों की तमाम बड़ी और फ़ैसलाकुन ज़ंगों में फ़रीक़ैन की तादाद में कोई मेल न था। रोमियों और ईरानियों की तादाद अक्सर ज़ंगों में कई गुना ज़्यादा थी। मुसलमानों की किल्लत और उनके दुश्मन ईरानियों और रोमियों की कसरत का एतराफ़ तमाम मुअर्रिखीन ने किया है। किसी एक मुअर्रिख़ ने मुसलमानों की फ़तेह के असबाब में अददी फ़ौकियत का ज़िक्र नहीं किया है। ज़ंगे यरमूक में मुसलमानों की तादाद ज़्यादा से ज़्यादा 15 से 25 हज़ार तक ज़िक्र की गई है जबकि रोमियों की तादाद कम से कम एक लाख बयान की गई है।

इस अहद के आम मुअर्रिखीन और खासकर मुस्लिम तारीख़दानों ने हरकुल के फ़ौज की तादाद का तख़ीना तक़रीबन डेढ़ लाख करार दिया है जो कि सब मुस्लह थे। मुस्लिम अफ़वाज की तादाद मैदाने ज़ंग में 15–20 हज़ार के आसपास थी। करीब–करीब

यही तनासुब जंगे कादसिया में मुसलमानों और ईरानियों के माबैन भी था। तादाद के इस अजीम तफ़ावत के बावजूद इन जंगों का नतीजा मुसिलम तारीख़ का सुनहरा बाब है।

रही बात साज़ो व सामान की तो जंगी असलहों में अरबों की हालत और भी ज्यादा कमज़ोर व पस्त और बेहैसियत थी। न वह मुनज्ज़म लश्कर थे और न किसी हुकूमत के बातन्ख़ाह फौजी थे कि हुकूमत अपनी सतह पर अस्लहा वगैरह मुहैया करती और कील-कांटे से दुरुस्त करके मैदाने जंग में रवाना करती।

मुसलमानों की बेसरोसामानी, बोसीदा लिबास, फटे-पुराने जूते और उनके ज़ईफ़ व लाग़र घोड़ों को देखकर अहले ईरान ठहाका लगाते थे और हैरान भी थे कि यह ख़स्ताहाल लोग किसी तरह इस अज़ीमुश्शान लश्कर का मुक़ाबला करेंगे जो हर तरह के हथियारों से लैस हैं।

हज़रत अबू वाएल जो कादसिया की जंग में शरीक थे वह बयान करते हैं कि मुझे हतमी तौर पर तो नहीं मालूम, फिर भी शायद हमारी तादाद सात—आठ हज़ार से ज्यादा न थी, जबकि मुश्किल की तादाद तीस हज़ार या उससे ऊपर ही थी। वह हमसे कहते थे कि तुम्हारे पास न ताक़त है न कूब्त है और न अच्छे हथियार ही हैं। तुमने यहां आने की हिम्मत कैसे की। जाओ वापस चले जाओ। हमने कहा कि हम लौटने वाले लोग नहीं हैं वह हमारे तीरों को देखकर हंसते थे।

जहां तक ताल्लुक़ है, अरबों के जंगी निज़ाम व अस्करी तरबियत का तो इससे इनकार नहीं कि वह जंग के ख़ुंगर थे। दिलेर व बहादुर थे और अपनी अना की ख़ातिर चालिस साल तक जंग की भट्टी में सुलगने को भी तैयार थे लेकिन इनकी यह सारी बहादुरियां आपसी ख़ाना जंगों तक ही महदूद थीं। रोम व ईरान से हमेशा ख़ाएफ़ रहते और इन अजीम सल्तनतों से टकराने की कभी जुरत न कर सकते थे। उनकी जंगी महारतों का दायरा बहुत ही महदूद था। वह हब्शा से शिकस्त खा चुके थे। ईरान के मुतीअ व

फ़रमाबरदार हो चुके थे और जब अबरहा ने मक्का पर चढ़ाई की तो न सिर्फ़ बेबस होकर मक्का को ख़ाली कर दिया बल्कि ख़ाना—ए—खुदा की हिफ़ाज़त से भी अपना दामन छुड़ा लिया।

इस बारे में गुस्तावली बान मारुफ़ फ़्रांसीसी मुअर्रिख़ की यह शहादत मुलाहज़ा हो:

“लेकिन अरब फुनूने अरब से बिल्कुल नावाकिफ़ थे, शुजाअत व बहादुरी इस फ़न की जगह नहीं ले सकती थी, और अरबों की ख़ाना जंगियां उन वहशियों की जंगों की तरह थीं जो बगैर किसी तंज़ीम के दुश्मनों पर हमलावर हो जाते हैं और उनमें हर कोई ज़ाति मफ़ाद के लिए लड़ाई लड़ना चाहता है, इसके बरअक्स अहले रोम व ईरान थे जिनको फुनूने हरब से गैर मामूली वाक़फ़ियत थी और जिसके जौहर उन्होंने अरबों को पहले ही मारके में दिखा दिये थे।”

(La Civilization des Arab: 125)

अरब के बिलमक़ाबिल रोम व ईरान का जंगी निज़ाम उस ज़माने में बहुत तरक़की याप्ता था। रोम की बाज़नतीनी हुकूमत सातवीं सदी में अपने उर्लज को पहुंच चुकी थी, ईरान व रोम में जो जंगे हुईं, उनसे दोनों को बहुत कुछ तजुर्बात हुए, जंग के नए—नए तरीक़े मालूम हुए। अब ऐसे में यह ख़्याल करना कि अरब अपने कबाइली जंगों की वजह से इतने मशाख़ और ताक़तवर हो गए थे कि उन्होंने रोम और ईरान की शंहशाइयत को शिकस्त दे दी, निहायत ही गैर माकूल बात है क्योंकि अगर इस ख़्याल को सही मान लिया जाए कि अरबों का फुतूहात का राज़ उनकी जंगी क़ाबिलियत है तो यह सवाल उठना यक़ीनी है कि इस्लाम की आमद से क़ब्ल उन्होंने अपने जज़ीरे से निकलने और दूसरों पर हमला करने की जुरात क्यों न की। बेसअते नबवी (स030) से पहले रोम व ईरान के सामने वह सीना सिपर क्यों न हुए। सदियों तक वह ईरान व रोम से लरज़ां व ख़ाएफ़ क्यों रहे।

ईमान की ताक़त: अरबों की शानदार फुतूहात और तारीख़ इन्सानी के इस हैरतअंगेज़ इन्क़िलाब की वजह सिर्फ़ व सिर्फ़ वह ईमानी ताक़त है जिसने अरबों में एक

नई रुह फूंक दी और उनके अन्दर एक नया जोश, वलवला पैदा कर दिया। वह पहले की तरह बेनज़ और लामुहज़्ज़ब नहीं रहे, बल्कि वह एक ज़िन्दा मज़्हब के हामी और एक ज़बरदस्त कूब्वत के मालिक हो गए। अल्लाह के रसूल स0अ0 ने उनकी ऐसी ईमानी तरबियत फ़रमाई कि उनकी दुनिया ही बदल गई। वह मय अपने कुलूब के, मय अपने हाथ पावं के, मय अपनी रुहों के इस्लाम के दामन से वाबस्ता हो गए।

ईमान की कूब्वत ने अरबों के ज़हनों में इन्किलाब बरपा कर दिया। वह दुनिया के लिए और दुनिया उनके लिए बिल्कुल बदल गई। जो दुनिया उनके लिए हैरत व इस्तिअजाब का बाइस थी, वह जैसे वह ललचाई हुई नज़रों से देखा करते थे, अब उनकी नज़रों में वह हकीर व बेमाया हो गई। जिन कौमों व जमाअतों को वह हमेशा इज़्जत व इहतिराम और रशक व ताज़ीम की नज़र से देखाकरते थे उनकी सूतर में जानवरों और चौपायों से ज्यादा उनकी हैसियत न बची। उनकी ज़ाहिरी शान व शौकृत, दुनियावी साजो सामान और उनका ठाठ बाठ व ज़ीनत सब हकीर हो गया।

अबतक उनकी ज़िन्दिगियां बेमक्सद थीं, ईमान की दौलत ने उन्हें ज़िन्दगी का मक्सद अता किया। उनके दिल की गहराइयों में यह अकीदा पुख्ता हो गया कि वह दुनिया के लिए नहीं बल्कि दुनिया उनके लिए बरपा की गयी है। और वह दीन के फरोग की जद्दोजहद और आम इन्सानों की हिदायत के लिए दुनिया में भेजे गए हैं। कौमों की इस्लाह का काम उनके सुपुर्द हुआ है। और इस हकीकत का ऐलान उनके नुमाइन्दे हज़रत रबीअ बिन आमिर ने ईरानी लश्कर के सेनापति आज़मे रुस्तम के दरबार में इस तौर पर किया कि उन्हें मरऊब करने के लिए दरबार को ख़ूब सजाया गया था। हर तरफ़ सुनहरे और रेशमी कालीम बिछाए गए थे। मोती—याकूत से बनी कीमती अशिया सजायी गयी थीं। रुस्तम अपना कीमती ताज पहने हुए सोने के तख्त पर बैठा, उस वक्त हज़रत रबई बिन आमिर फटे—पुराने कपड़े पहने,

तलवार—ढाल लिए हुए एक मामूली और पस्त कामद घोड़े पर सवार दरबार में दाखिल हुए और दरबार की चमक—दमक और रुस्तक की शान व शोकत और दरबारियों की अकड़ फूं की कुछ परवाह किए बिना पूरे जोश और वक़ार से कहा, अल्लाह ने हमें मबउस किया है ताकि हम लोगों को इन्सानों की बन्दगी से निकालकर खुदाए वाहिद का परस्तार बनाए। दुनिया की तंगी सेनिकालकर उसकी कुशादगी की तरफ़ रहनुमाई करें और मज़ाहिब की बेतदालियों से निकाल कर इस्लाम की सिराते मुस्तकीम पर गामज़न करें। ईमान की कूब्वत ने उनके अन्दर यह यकीन पैदा कर दिया कि खुदा ही उनकी मदद का ज़ामिन है और उसने उनसे फ़तेह व नुसरत का वादा किया है। और खुदा का वादा कभी ग़्लत नहीं हो सकता। उन्हें खुदा और उसके रसूल पर पूरा ईमान था। किल्लत व कसरत का सवाल उनके लिए हैच हो गया। ख़तरात का खौफ़ उनके दिलों से जाता रहा और उनके अन्दरून में ऐसी बेपनाह कूब्वत पैदा हो गई कि कैसे ही नाखुशगवार और नामुआफ़िक हालात पेश आते उनके पाए सबात में कोई लग़ज़िश न आती। उनके सुकून व इत्मिनान में कोई फ़र्क न पड़ता। तादाद और साजोसामान को वह बेहैसियत समझने लगे और असबाब की परशतिश से बेनियाज हो गए। ईमान की इस अज़ीम ताक़त के ज़रिए उन्होंने वह महरूल क़ौल कारनामे अंजाम दिए कि अगर तवातिर के साथ तारीखी शहादतें न होतीं तो उनकी हैसियत मनगढ़त कहानियों और तफ़रीही अफ़सानों से ज्यादा न होतीं। मारूफ़ मुश्तशरिक मैक्स मेयरहोफ़ अपने तासुरात को बयान करते हुए कहता है:

हमारे लिए यह समझना तक़रीबन नामुमकिन है कि किस तरह मुख्तलिफ़ क़बाएल में मुनकिस्म अरबों में जो ज़रूरी सामाने जंग से भी महरूम थे, इस मुख्तसर सी मुददत में इन रोमियों और ईरानियों हरा दिया, जो अपनी तादाद और सामाने जंग में उनसे कई गुना ज़ाएद और फुनूने हरब में माहिर थे और मुनज्ज़म लश्कर की हैसियत उनसे मारका आज़मा थे।”

अच्छी बात का हुक्म देना

बुरी बात से रोकना

अल्लाह तबारक व तआला ने जब हजरत मूसा अलैहिस्सलाम और हजरत हारून अलैहिस्सलाम को फ़िर औन जैसे काफ़िर और खुदा दुश्मन के पास दावत इलल्लाह के लिये भेजा तो फ़रमाया:

‘तुम दोनों उससे नर्म बात करना।’

अम् बिल मारूफ में जो लोग कोताही करते हैं, बुराई होते देखते हैं, मगर उसे रोकते नहीं, अच्छी बात कहने के वक्त भी अच्छी बात नहीं कहते, इस्लाम व ईमान की दावत नहीं देते और अपनी ज़बान को बन्द रखते हैं, तो वे अल्लाह और अल्लाह के रसूल स०अ० की नाराज़गी को मोल लेते हैं और अपनी ज़बान का हक् अदा नहीं करते, ऐसे लोगों के लिये बड़ी वईद आयी है, हदीस शरीफ में यहां तक आता है:

‘जो शरूस तुम लोगों में से कोई बुराई देखे तो अपने हाथ से रोक दे और अगर उसकी ताक़त नहीं रखता है तो अपनी ज़बान से रोके और अगर उसकी भी कूव्वत न हो तो अपने दिल में बुरा जाने, और यह ईमान की बड़ी कमज़ोरी है।’

क़ैल व फ़ेल में सदाक़त पैदा करने वाले को उसका लिहाज़ रखना बहुत ज़रूरी है कि वह कहने से पहले खुद उस पर अमल करे।

कुरआन शरीफ में आता है:

‘ऐ ईमान वालो! वह बात क्यों कहते हो जिस पर तुम खुद अमल नहीं करते। अल्लाह के नज़दीक यह बात बड़ी गुस्से और नाराज़गी की है कि तुम वह कहो जो खुद नहीं करते।’

बाज़ लोग तब्लीग व दावत का काम नहीं करते कि वह खुद अमल पैरा नहीं होते, न तो खुद अमल करें न तो दूसरों से कहें, गोया दो गुनाहों से मुरतकिब होते हैं। पहला तो खुद नेक काम न करना, दूसरा अपनी ज़बान से उस ज़रूरी काम न अंजाम देना।

बहुत से लोगों का यह स्व्याल होता है कि खुद तो नेक होते हैं, अच्छे काम करते हैं, नमाजी होते हैं, रोज़ा रखते हैं, सच बोलते हैं, मगर दूसरों को नमाज, रोजे की नसीहत नहीं करते, न सच के बारे में कहते हैं, अपना अमल अपनी निजात के लिये काफ़ी समझते हैं, यह भी बड़ी नादानी की बात है कि खुद तो आग से बचने की कोशिश करें और दूसरों को आग में जलने दें। इसकी मिसाल ऐसी है कि एक नाबीना और एक आंखों वाला आदमी कुवें पर पहुंचा, और आंखों वाला सामने कुएं को देखकर रुक गया, बैठ गया और गिरने से बच गया। थोड़ी देर में अंधा आदमी आ गया और कुवें में गिरने लगा, आंखों वाला आदमी स्वामोश रहा और नाबीना को गिरते, हलाक होते देखता रहा, न हाथ पकड़ कर घसीटा, न ज़बान से कुछ कहा, बस दिल में बुरा जानता रहा, उसके बुरा जानने से गिरने वाले को क्या फ़ायदा पहुंचा।

बस यही हाल उस नेक शरूस का भी है कि खुद तो दोज़ख से बचने का सामान करता रहा, और दूसरे को दोज़ख का मुस्तहिक बनते देखता रहा, मगर उन कामों से न रोका, जिनके करने से वह शरूस दोज़ख में जा रहा है।

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

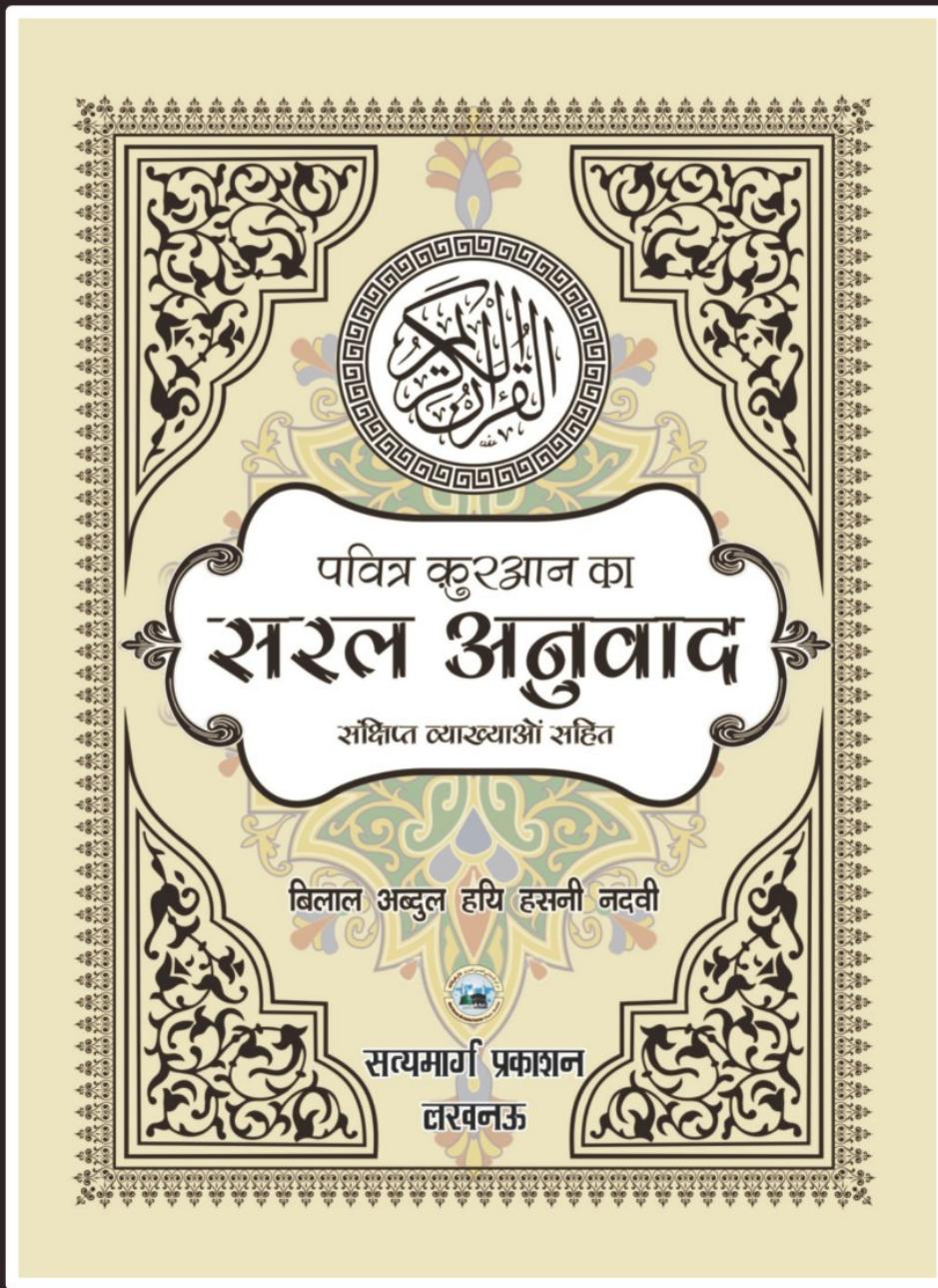
Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP -19

Issue: 5-6

MAY - JUNE 2019

VOLUME: 11



Editor: Bilal Abdul Hai Hasan Nadwi

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.

Mobile: 9565271812

E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalnadi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche, Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.